

अनौपचारिका

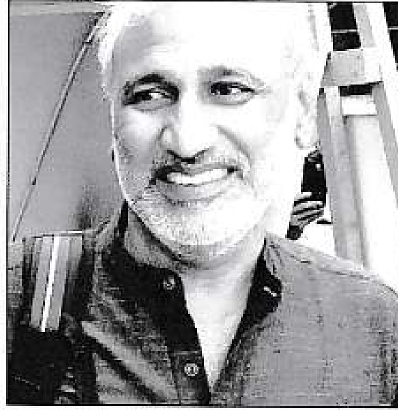
समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : ४६ अंक : ११ कार्तिक-मार्गशीष वि.सं.- २०७७ नवम्बर २०२० पृष्ठ २८ RNI 43602/77 ISSN No. 2581-981X

श्रद्धांजलि

बीकानेर उर्मूल ट्रस्ट के अरविन्द ओझा का निधन, सुबह-सुबह बुरी ख़बर, कोरोना ने मेरे सबसे अज़ीज़ दोस्तों में एक अरविंद ओझा को भी छीन लिया। प्यार में मैं और अन्य करीबी मित्र उन्हें गुरुजी कहते थे। बीकानेर में संजय घोष और अरविंद ओझा ने उर्मूल न्यास के माध्यम से सामाजिक कार्य में कई नवाचार किए। किसानों-ग्वालों को संगठित करने के साथ अकाल में गड्ढे खोदने को मजबूर हो गए दलित बुनकरों को वे वापस कला की दुनिया में लिवा लाए।
उनकी संस्थाएं खड़ी कीं और उन्हीं को सौंप दीं। अहमदाबाद से विशेषज्ञ बुलाकर उन ग्रामीण कलाकारों को रंग और डिज़ाइन के अधुनातन परिवेश से भी परिचित करवाया। संजय बाद में असम के माजुली द्वीप में सामाजिक कार्य की मुहिम चलाने चले गए, और अल्फ़ा के हाथों अकारण मारे गए। अरविंद अकेले रह गए। पर उन्होंने काम बख़ूबी संभाल लिया। यह अस्सी के दशक की बात है।

तब मैं भी वापस बीकानेर आ गया था। तभी उनका काम नज़दीक से देखा। उनके साथ अक्सर लूणकरणसर जाता था, जहां संजय ने न्यास का एक छोटा मगर सुंदर परिसर स्थापित किया था। अभी कोरोना की मार से मिलकर



जूझने वाली उनकी दो बेटियां और बेटा तब छोटे थे। हमारे बच्चे भी। सबसे छोटी चीनू तो तब हरदम सुशीलाजी की गोद में रहती थी। मैंने अनिल अग्रवाल और सुनीता नारायण के कहने पर राजस्थान के पारंपरिक जल-संचय स्रोतों का जो अध्ययन किया, उसमें अरविंदजी ने काफ़ी मदद की थी।

अनिलजी और सुनीता बीकानेर आए भी। अरविंदजी के साथ मैं गांव-गांव, ढाणी-ढाणी उन्हीं के वाहनों में भटका। उन्होंने- और सुशीलाजी ने भी - बाद में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में बहुत दिलचस्पी ली। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के वे सचिव थे। अभी बीकानेर में उनकी तबीयत बिगड़ी। पीबीएम में भरती करवाया। फिर जयपुर फ़ोर्टिस में लाए। लेकिन तब तक शायद देर हो चुकी थी। उन्होंने अस्पताल में भी शनिवार ७ नवंबर की सुबह तक मौत से हंसते-हंसते लम्बा संघर्ष किया। लेकिन इस बीमारी का, हम जानते हैं, क्या भरोसा। बहुत बुरा हुआ।

-ओम थानवी

समिति के माननीय सदस्यों द्वारा अरविन्द जी को दी गयी श्रद्धांजलि

जान कर अत्यंत दु:ख हुआ कि श्री अरविन्द ओझा का निधन हो गया। समिति ही नहीं सब सामाजिक कार्य को इसका खामियाज़ा हुआ है। परमपिता से प्रार्थना है कि दिंवगत आत्मा को शांति प्रदान करे और परिवार को यह विरह सहने की शक्ति प्रदान करे।

-रणजीत सिंह कूमट

अरविंदजी के निधन का समाचार जानकर बहुत दुख हुआ। ऐसे साथी का अचानक चला जाना दुखद है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे तथा परिवारजनों को यह दुख सहने की शक्ति दे।

ओम शांति शांति शांति...

-सुशील कुमार दशोरा

Very Sorry to hear about Arvind. Our deepest condolences to Sushila, his family and to you all in Prodh Shiksha. may God give you strength to bear with the loss - Bunker & Aruna, Nikhil, Shankar, MKSS and School for Democracy.

-Aruna Roy

दादूवाणी

जे पहुंचे ते कहि गये, तिनकी एकै बात।
सबै सयाने एकमत, उनकी एकै जात।।

जो पहुंचे हुए संत–महात्मा हैं, उन सबने एक ही बात कही है। उन सयानों का मत भी एक ही है और उनकी जाति भी एक ही है।

कहने का मतलब यह है कि चाहे किसी जाति का कोई संत–महात्मा हो, उसने वही बात कही है जो किसी दूसरे संत ने कही है। इस तरह संतों की जाति नहीं देखी जाती। सभी संत एक समान हैं। उनकी शिक्षाएं भी एक ही जैसी हैं।

जे पहुंचे ते पुंहुंछिये, तिनकी एकै बात।
सब साधो का एकमत, बिच के बारह बाट।।

ऊपर के दोहे में कही हुई बात को दादू ने इस दोहे में और अच्छी तरह समझाया है। दादू कहते हैं कि जो पहुंचे हुए संत महात्मा हैं, उनका मत तो एक ही है, उन पहुंचे संतों की शिक्षाएं भी एक ही हैं। लेकिन जिनका मन कभी इस संत की ओर जाता है, कभी उस महात्मा की ओर, वे जीवन भर भटकते ही रहते हैं। ऐसे बीच के बारहबाट हुए लोगों को न तो परमात्मा मिलता है, न उनका जीवन ही सुखी रहता है।

घीव दूध में रमि रहा, व्यापक सब ही ठौर।
दादू बकता बहुत हैं, मथि काढ़े ते और।।

संत दादू कहते हैं कि जिस तरह दूध की बूंद–बूंद में घी है (तभी तो दूध से घी निकलता है) उसी तरह ईश्वर कण कण में समाया हुआ है। फिर भी जैसे दूध में से घी अपने आप नहीं निकलता, उसे मथकर निकालना पड़ता है, उसी तरह यह बात सच है कि ईश्वर सब जगह है, सभी जीवों में है, लेकिन वह अपने आप दिखाई नहीं देता। उसे ज्ञान की आंखों से ढूंढना पड़ता है। केवल बकने से या पाखंड से उस परमात्मा के दर्शन नहीं हो सकते।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

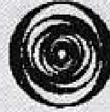
वर्ष : ४६ अंक : ११ कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. २०७७ नवम्बर, २०२०

क्र म

अपील

समिति के सभी सदस्यों, दूर-दराज के मित्रों एवं भारत के विभिन्न राज्यों में फैले सुधी पाठकों से निवेदन है कि समिति के प्रकाशन की निरंतरता बनाये रखने के लिए अपनी सहयोग राशि पूरी उदारता के साथ भिजवाने का अनुग्रह करें।

आज किसी भी पत्रिका का प्रकाशन बहुत मुश्किल काम है मगर समिति अपने पूर्ण सेवा भाव के साथ अनौपचारिका को पिछले ४५ वर्षों से निरंतर निकाल रही है। सभी प्रबुद्ध पाठक जानते हैं कि अभी हाल ही में कादम्बिनी भी बंद हो गई है जो हिन्दुस्तान टाइम्स का प्रकाशन था। ऐसी स्थिति में हम कटिबद्ध हैं कि अनौपचारिका निरंतर निकलती रहे। आपका सहयोग सादर अपेक्षित है।



संस्थापक संपादक एवं संरक्षक :
रमेश थानवी
कार्यकारी संपादक :
प्रेम गुप्ता
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
७-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-३०२००४
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

सद्‌भावना सहयोग :
व्यक्तिगत ३५०/- रुपये
संस्थागत वार्षिक
शुल्क ५००/- रुपये
मैत्री समुदाय ३०००/- रुपये

हम तो दुआ ही मांगते रह गए!!!

हम तो दुआ ही मांगते रह गये और वे हमें छोड़ कर चले गये। अरविंदजी हमें ऐसे कैसे छोड़कर जा सकते हैं; कानों पर विश्वास तो होता ही नहीं । कोरोना पॉजिटिव होने पर मेरी अरविंद जी से बात हुई थी। मैंने उनसे कहा था कि– आप तो हमारे सब के सेनापति हैं और सेनापति को इस तरह की विपदा ग्रस्त होने का कोई अधिकार नहीं है! आप शीघ्र ठीक होइए। उनका जवाब था प्रेम जी मैं जल्दी ही जयपुर आता हूं आप लोगों से बातें करनी हैं। उन्होंने समाचार लिया था कि घर पर सब कैसे हैं? जब मैंने पूछा कि सुशीलाजी कैसी हैं और बच्चे कैसे हैं तो उनका जवाब था कि सुशीलाजी और बिटिया बिट्टू को तो मैंने किशनगढ़ भेज दिया है। उनकी बड़ी बेटी किशनगढ़ में प्रोफ़ेसर है। मेरे यह कहने पर कि आप की देखभाल कौन कर रहा है तो उन्होंने बताया कि छोटी बेटी चीनु और बेटा अंशुल यहां हैं। वे दोनों देखभाल कर रहे हैं।

उनकी छोटी बेटी चीनु और बेटे अंशुल को भी कोरोना ने नहीं छोड़ा था लेकिन वे इस विपदा से जल्दी ही बाहर आ गए थे और उनकी सेवा कर रहे थे। वे दोनों अंतिम समय तक उनकी सेवा में लगे रहे। यह कैसी विडंबना थी कि बेटे और बेटी को पिता की सेवा के लिए भी सुरक्षा कवच का सहारा लेना होता था जबकि अपने बच्चों के लिए पिता तो स्वयं ही एक सुरक्षा कवच है! कितनी दर्द भरी बात है कि पत्नी जो हमेशा सुख-दुख में उनके साथ होती थी उन्हें ही उनसे मिलने से रोक दिया गया।

अरविंदजी को बीकानेर से जयपुर लाया गया था। सीधे फोर्टिस नामक नामी अस्पताल में दाखिल किया गया था। हालत गंभीर थी मगर अरविंदजी तथता में। वही सरलता, विरलता। बीमारी के दंश को दूर ठेलती वही मुस्कान। ऐसी विनम्र विभूति को इस संकट से उबारने के लिए किस-किसने प्रार्थना नहीं की थी। जिसने सुना वही सब उन्हें बचाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने, दुआ मांगने, यहां तक कि जिसने जैसा बताया वैसा कर गुजरने को तैयार था। लोगों के होंठ सूख गए थे प्रार्थना कर कर के, लेकिन ईश्वर ने हमारी यह प्रार्थना नहीं सुनी और हमसे छीन लिया एक कर्मठ, मेहनती, बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री अरविंद ओझा को। ऐसे व्यक्तित्व को जो हमेशा मुस्कुराता रहता था। जो हमेशा समाज के हर बालक, बालिका, गरीब, जरूरतमंद लोगों के बारे में सोचता था। विचार करता था। मनन करता था और लग



जाता था उनके कष्ट को दूर करने में। ऐसे कर्मठ, बहुमुखी प्रतिभा और सदा प्रफुल्लित अरविंद ओझा हर समय हमारे साथ होंगे। उस हर बालिका के सपनों में जिनको उन्होंने आसमान को छूने का, उसे पा लेने का सपना दिखाया था। वे हर गांव की महिलाओं, बालिकाओं, बालकों और वहां के कार्यकर्ताओं से खुद जाकर मिलते थे। उनके सपनों के सारथी बन जाते थे।

अपने साथ काम कर रहे कार्यकर्ताओं को संबल देना उनके व्यक्तित्व का एक बड़ा भारी गुण था। उनकी इच्छा रहती थी कि उनके साथ काम करने वाला हर व्यक्ति जागरूक हो, सबल हो, मेहनती हो और ऐसा करने में वे कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते थे।

अरविंद ओझा न केवल बीकानेर उर्मूल ट्रस्ट, लूणकरणसर के सचिव थे। वे पश्चिमी राजस्थान की १४ संस्थाओं के प्रेरक मार्गदर्शी भी थे।

अरविंद ओझा राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के भी सचिव थे। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति से उनका नाता बहुत पुराना था। वे अनिल बोर्दिया के प्रियजनों में से एक थे। गर्ल्स नॉट ब्राइड्स राजस्थान के प्रमुख भी थे।

समिति के सचिव होने के नाते एवं जयपुर से उनका विशेष लगाव था क्योंकि उनकी शिक्षा दीक्षा सब जयपुर में ही हुई थी। जयपुर उन्हें प्रिय भी था और एक कारण यह भी था कि उनके अजीज मित्र भी जयपुर में ही बसते थे। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री रमेश थानवी से उनका विशेष प्यार का, सम्मान का, आदर का रिश्ता था। यह रिश्ता बड़े भाई जैसा था। थानवी जी को वे भाई साहब कह कर ही बुलाते थे।

अभी ३ वर्ष पूर्व जब वे राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के सचिव बने तो उन्होंने हमें एक टीम के साथ विशेष रूप से बीकानेर आने के लिए आमंत्रित किया था। इस आमंत्रण में उनका हमारे प्रति प्यार था। वे चाहते थे कि राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के कार्यकर्ताओं को कार्य की नई दिशा, नए अवसर मिलें। हम वहां जाकर वहां हो रहे कार्यों को जान सकें, देख सकें और बहुत कुछ सीख सकें। ताकि समिति को भी नए कार्यों एवं नवाचारों की दिशा में कार्य करने का अवसर मिले।

उनके इस प्यार और स्नेह भरे, आमंत्रण के कारण हम लोगों की यह टीम बीकानेर पहुंची थी और हम वहां जाकर गांव में हो रहे कार्यों का जायजा ले सके थे। समिति के सचिव रहते हुए उन्होंने समिति के कार्यों में मदद ही नहीं कि बल्कि समय-समय पर वे आर्थिक संकट से भी समिति को उबारते रहे। बज्जू में प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन का आयोजन, भाई कृष्णकुमार को अनिल बोर्दिया स्मृति व्याख्यान के लिए आमंत्रित करना और न जाने कितने ही आयोजन! सदा प्रफुल्लित करने वाले! अब भला कोई कैसे उनको भुला सकेगा? **सदा याद आते रहेंगे अरविंद जी।** ❑ **–प्रेम गुप्ता**



दीवाली के तीन दीये

ख्वाजा अहमद अब्बास



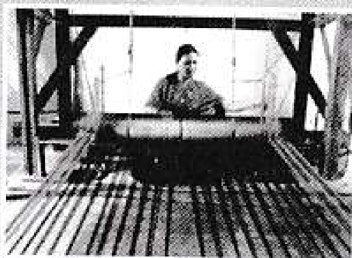
अनुवाद : सुरेंद्र बांसल

उर्दू लेखक व फिल्म निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास का जन्म ७ जून १९१४ को पानीपत में हुआ। उन्होंने डॉक्टर कोटनिस की अमर कहानी, श्री चार सौ बीस, बॉबी और मेरा नाम जोकर जैसी फिल्मों की कहानियां, स्क्रीन प्ले और संवाद लिखे। दो बूंद पानी, सात हिंदुस्तानी व हवा महल को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। उनका निधन १९७८ में हुआ। उन्हें १९६८ में पद्मश्री से नवाजा गया। कई अन्य अवॉर्ड्स भी मिले। दीप-पर्व पर एक संदेशपरक कहानी। ❑ सं.

पहला दीया

दीवाली का यह दीया कोई मामूली दीया नहीं था। दीये की शक्ल का बड़ा सा बिजली का लैंप था, जो सेठ लक्ष्मीदास की कोठी के सामने बरामदे में लगा था। बीच में दीयों का सम्राट था। जैसे सूर्य के इर्द-गिर्द असंख्य तारे हैं, वैसे ही इस दीये के चारों ओर हजारों बल्ब जगमगा रहे थे, मालिन ने हार में चमेली के सफेद फूल गूंथे हों जैसे। बरामदे के हर मेहराब में दीयों के हार थे। पूरे घर में दस हजार बिजली के दीये शाम से ही दीवाली मना रहे थे, लेकिन एक दीया प्रमुख था। यह दीयों का सम्राट था, जो शाम के धुंधले को दोपहर जैसा रोशन किए था। यह दीया सेठ लक्ष्मीदास अमेरिका से लाए थे। वह वहां अपनी कंपनी के लिए बिजली का सामान खरीदने गए थे। यह दीया उन्हें भेंट में मिला। शाम से ही यह दीया अपनी भड़कीली अमेरिकन शान से जल रहा था। लक्ष्मीदास का कहना था कि दीवाली सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है। जितनी ज्यादा रोशनी होगी, उतनी ही लक्ष्मी मां की कृपा बरसेगी। यह बात सच भी साबित हुई थी। २०-२२ साल पहले जब उनके पास कपड़े की छोटी दुकान थी, घर में कड़वे तेल के सौ दीये जलते थे। फिर युद्ध के दौरान उन्हें सैनिकों को कंबल सप्लाई करने का ठेका मिला। इसके बाद उनका नया घर बना तो एक हजार दीये जगमगाने लगे। फिर देश आजाद हुआ। उन्हें बांध बनाने के लिए मजदूरों की सप्लाई का ठेका मिला। अब जो बंगला बना तो उसमें पांच हजार बिजली के बल्ब जगमगा उठे। इस साल तो अमेरिकन कंपनी के साथ साझेदारी से कई करोड़ का कारखाना बना था। इसमें लाखों की आमदनी होनी थी, अगर इनकम टैक्स डिपार्टमेंट परेशान न करे। कौन जाने, इस बार देवी मां प्रसन्न हों और सेठ जी अगले साल तक पांच-छह कारखाने और खरीद लें।

...सेठ साहब बिजली विभाग के इंजीनियर को निर्देश दे रहे थे कि वह कनेक्शन पर पूरा ध्यान दें, ताकि कोई चूक न रहे। जेनरेटर सेट भी लगाया गया ताकि बिजली जाने पर भी रोशनी रहे। एकाएक सेठ साहब को लगा, मानो प्रकाश तेज हो उठा है।



मिशन
ताना-बाना

हमारे समाज का ताना-बाना जीर्ण-शीर्ण हो गया है। जगह-जगह से फट गया है। समाज का ताना-बाना फट जाने के साथ-साथ हमारे मन का ताना-बाना भी फट गया है– ऐसे ही जैसे खटाई डालने से दूध फट जाता है। यह खटाई किसने डाली, कहां डाली, क्यों डाली यह सोचने का अभी समय नहीं है। सोचना यह है कि इस जीर्ण-शीर्ण हो गये ताने-बाने को आगे फटने से कैसे रोकें? सोचना यह भी है कि समाज को वह ऊर्जा कहां से मिले कि इस ताने-बाने में स्वाभाविक और सहज कसावट आ जाये! मन का ताना-बाना फटना तो और भी चिंता का विषय है। इसे हम एक दुर्घटना ही कहेंगे। यदि फिरकापरस्ती इस ताने-बाने को उधेड़ने और फाड़ कर बिखेर देने में सफल हो गयी तो हमारा समाज कल भारतीय समाज कहलाने लायक भी नहीं रहेगा। तो हम आज क्या करें? ❑

देवी लक्ष्मी आ गई.., उन्होंने उल्लसित भाव से कहा। हालांकि इंजीनियर ने समझाया कि ऐसा वोल्टेज बढ़ने से हुआ है। इंजीनियर को रोशनी की देखरेख करने की हिदायत देकर सेठ साहब सीढ़ियां उतरकर बाग की ओर चले गए, जहां हर पेड़ पर बिजली की लड़ियां झूल रही थीं। तभी उनकी नजर सामने सड़क पर खड़ी स्त्री पर पड़ी, जो गांव से आई प्रतीत होती थी। बदन पर मैला सा घाघरा व सिर पर ओढ़नी थी। वह एक गठरी लिए थी। कपड़ों में जगह-जगह पैबंद थे। होगी कोई भिखारिन, सेठ ने मन में सोचा। क्या चाहिए? उन्होंने सीढ़ियां उतरते हुए पूछा। नजदीक जाने पर उन्होंने देखा कि स्त्री खूबसूरत और युवा है।

एक रात ठहरने का ठिकाना चाहिए सेठ जी, दूर से आई हूं.., स्त्री ने याचना सी की।

ना बाबा, माफ करो, वे जल्दी से बोले। एक अनजान युवा स्त्री रात भर उनके घर में रहे तो इसके परिणाम क्या होंगे? हो सकता है वह चोर हो या उन्हें ब्लैकमेल करके रुपये वसूल कर ले..। उनका बेटा बड़ा था, कहीं इसके चक्कर में न आ जाए। सेठ जी के मन में फिर भी कुछ संवेदनशीलता तो थी। सोचा, दीवाली की रात किसी को खाली हाथ नहीं लौटाना चाहिए। बोले, भूखी हो तो खाना दे देता हूं। लड्डू-पूरी., जो जी चाहे, खाओ।

मैं भिखारिन नहीं हूं, सेठ जी! उसने सिर पर रखी गठरी की ओर इशारा करते हुए कहा, मेरे पास खाने को बहुत-कुछ है। मकई की रोटी-चने का साग। गांव का घी-दही-दूध है। आपके पूरे घर को भोजन करा सकती हूं। मुझे बस रात भर का ठिकाना चाहिए।

सेठ घबरा गए। सोचा, एक मामूली स्त्री तो इस तरह नहीं बोल सकती। कहीं सीआइडी या इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से तो नहीं आई! गला साफ कर बोले, बाबा, माफ करो। हमारे घर में जगह नहीं है।

ओह, तब दूसरा घर देखना पड़ेगा.., कहते हुए स्त्री चली गई। सेठ मुड़े और बरामदे की ओर चलने लगे। एकाएक उन्हें लगा मानो अमेरिकन दीये का प्रकाश पीला हो रहा है। पावर-हाउस का करेंट कम हो रहा है, कहते हुए वह चिल्लाए तो इंजीनियर दौड़ता हुआ आया और बोला, सेठ जी, करेंट ठीक है। जेनरेटर भी तैयार है। आप घबराएं नहीं।

मगर सेठ जी का दिल अजीब सी बेचैनी से धड़क रहा था। एक पल को भी अंधेरा हो गया और लक्ष्मी मां रूठ कर चली गई तो?

दूसरा दीया

इनकम टैक्स अधिकारी लक्ष्मीकांत तेल की बोतल लेकर अपने फ्लैट की बालकनी में निकला। उसने देखा कि सामने सेठ लक्ष्मीदास का महल बिजली के बल्बों से जगमगा रहा है।

सोचने लगा, हां, भई जब इतना काला पैसा हो तो दस लाख बल्ब भी जलाए जा सकते हैं। फिर उसने देखा कि उसकी बालकनी की

मुंडेर पर जलते सौ दीयों में से एक की लौ धीमी हो रही है। घबरा कर सोचा, कहीं दीया बुझ न जाए, अपशकुन हो जाएगा। जल्दी से जाकर उसने दीये में तेल उलट दिया। बत्ती ऊपर करते ही लगा मानो सारे सौ दीयों की रोशनी तेज हो उठी हो।

धन्य हो देवी! उसने दीवार पर लगी लक्ष्मी मां के चित्र को प्रणाम किया, इस वर्ष तो तुम्हारी कृपा रही है।

फिर वह कुर्सी पर बैठा और अपना जासूसी उपन्यास पढ़ने लगा, जो खत्म होने ही वाला था। हीरो डाकुओं की टोली के पंजे में फंसा था और निकलने की जुगत कर ही रहा था कि दरवाजे की घंटी बजी। रसोई से पत्नी चिल्लाई, अजी, देखना तो कौन है? कहीं सेठ जी के यहां से मिठाई तो नहीं आ गई?

मंगू से कहो न? उपन्यास से नजरें उठाए बिना वह बोला।

मंगू को मैंने बाजार भेजा है मिठाई लाने.. तो गंगा से कहो..

गंगा उनके यहां झाड़ू-पोछा-बर्तन करती थी। गंगा की तो मैंने छुट्टी कर दी है। बोलती थी, दीवाली की छुट्टी लेगी, मैंने उसकी छुट्टी ही कर दी.., पत्नी का चिड़चिड़ाहट भरा स्वर फिर सुनाई दिया। घंटी एक बार फिर से बजने लगी।

हार कर उसने किताब छोड़ी और दरवाजा खोला। सामने एक स्त्री थी। मैले-कुचैले से कपड़े, दिखने में गंवार, लेकिन शक्ल सुंदर।

लक्ष्मीकांत मन ही मन सोचने लगा, सुंदरता पर भी टैक्स लगना चाहिए। गला खंखार कर ऊंची आवाज में बोला, क्या चाहिए?

बाबू जी, दूर से आई हूं। एक रात ठहरने का प्रबंध हो जाए तो कृपा होगी।

लक्ष्मीकांत ने एक बार स्त्री का पूरा निरीक्षण किया। फिर कनखियों से रसोई की ओर देखा, जहां पत्नी पूरियां तल रही थी। पत्नी लाजो आकर्षक नहीं थी, मगर अब तो वह फूहड़ भी दिखने लगी थी। मुंह पर चेचक के दाग थे, लेकिन दहेज में दस हजार नकद लाई थी। इसलिए रिश्तेदारों ने बधाइयां दी थीं, लक्ष्मीकांत, तेरे घर तो लक्ष्मी आई है।

लक्ष्मीकांत ने एक बार फिर पत्नी और उसके हाथ में रखे बेलन को देखा। फिर धीरे से स्त्री की ओर मुखातिब हुआ, आई कहां से हो?

दूर से आई हूं बाबू जी। पर अभी तो सेठ लक्ष्मीदास के यहां से आई हूं।

अरे तो सेठ जी ने तुम्हें जगह नहीं दी? वहां से सीधी यहां चली आई..?

जी बाबू जी।

लक्ष्मीकांत ने कई जासूसी उपन्यास पढ़े थे। उसे मालूम था कि यदि कोई पूंजीपति किसी को बर्बाद करना चाहे तो ऐसी स्त्री उसका हथियार भी हो सकती है।

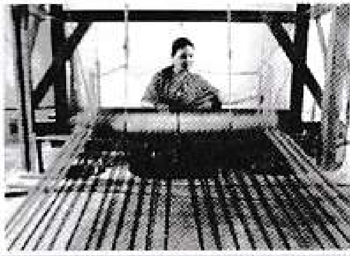
हूं.. तो सेठ जी ने मुझे यह भेंट भेजी है..। मगर दांत भींच कर उसने प्रत्यक्ष में इतना ही पूछा, इस गठरी में क्या है?



मिशन
ताना-बाना

तो हम क्या करें?

सवाल बहुतेरे हैं। हम क्या करें? कैसे करें? कहां से शुरू करें? किन को साथ लें? किन के कन्धे पर हाथ रखें? किन का हाथ पकड़ कर चलें? ऐसा कौन सा हाथ साथ होगा कि कल हम गिरें, पड़ें तो कोई हाथ थाम कर उठा ले। इतने सारे सवाल इसलिए हैं कि अब जो करना है वह कोई अकेला आदमी नहीं कर सकता। कोई सम्प्रदाय भी नहीं। न किसी जाति धर्म का कोई झण्डा-बरदार कर सकता है और न ही कोई दलगत राजनीति का सुनेता-कुनेता कर सकता है। तब प्रश्न यह है कि कौन करेगा? इस ताने-बाने का रखवाला कौन होगा? ऐसी स्थिति में हमें सिर्फ बीज बोना है। अनन्त करुणा, क्षमा और प्रेम का बीज। शुद्ध भाईचारे का बीज। निस्वार्थ सहजीवन का बीज। ❑



मिशन
ताना-बाना

तो आओ हम यह करें?

एक बहुत पुराना भजन है–
उसका मुखड़ा है–
रथ घेरो गोकुल वाला...
तो अब हमें अपना रथ घेरना पड़ेगा। लोक-गंगा की शरण में जाना पड़ेगा। असली लोग जहां बसते हैं वहां जाना होगा। दुनिया के बड़े दार्शनिक ने भी यही कहा था, कार्ल-मार्क्स ने। हमारे राष्ट्रपिता और बाबा विनोबा ने भी यही कहा था। थोड़े पीछे चले जायें तो वेद उपनिषद् भी यही कह गये। उन्हीं शास्त्रों ने जो हमें भारतीय होने का दम्भ देते हैं, दर्प देते हैं। महाभारत कहता है कि मार्ग वही है जिस पर महाजन चले हैं। तो आओ हम उसी मार्ग को अपनायें और मन में अनन्त करुणा लिये उन लोगों के बीच बैठ कर सीखना शुरू करें जो पढ़े-लिखे लोगों की भाषा में अभागे हैं। निर्बल हैं। इसी *लोक-शाला* से हमारा अगला मार्ग तय होगा। ❑

मकई की रोटी, चने का साग, गांव का असली घी-दूध-दही है।

जरूर इस गठरी में गहने और निशान लगे नोट होंगे। रात में यह गठरी यहां छोड़ कर चंपत हो जाएगी। इसके बाद शुरू होंगी सेठ की धमकियां। इनसे बचने के लिए उसे सेठ के इनकम टैक्स के रिटर्न पास करने पड़ेंगे।

जाओ, दूसरा घर देखो, उसने युवा स्त्री को अंतिम बार ठंडी आह भरते हुए देखा और न चाहते हुए भी दरवाजा बंद कर लिया।

कौन था? लाजो रसोई से चिल्लाई।

कोई नहीं..

कोई नहीं था तो किससे बातें कर रहे थे?

कोई भिखारिन थी..

भिखारिन? तभी इतनी देर तक मीठी-मीठी बातें कर रहे थे। मैं तुम्हें खूब..

इस बार फिर से घंटी बजी तो दोनों ने एक साथ दरवाजे की ओर देखा।

जाओ, फिर तुम्हारी भिखारिन आई होगी, पत्नी ने हुक्म दिया। लक्ष्मीकांत ने दरवाजा खोला, तो सफेद वर्दी पहने ड्राइवर हाथ में मिठाई का बड़ा-सा डिब्बा लिए खड़ा था।

सेठ लक्ष्मीदास ने मिठाई भेजी है..

लाजो ने जल्दी से डिब्बा ले लिया और फिर रसोई से ही चिल्ला कर ड्राइवर से बोली, अच्छा भैया, सेठ जी से हमारा नमस्ते कहना और दीवाली की बधाइयां देना।

दरवाजा बंद करके लक्ष्मीकांत कमरे में जाने ही लगा था कि पत्नी ने उसे डांटा, अरे, अब यहां खड़े होकर मेरा मुंह क्या देख रहे हो? जल्दी से बाहर जाओ और दीयों में तेल डालो। देखो, उनका प्रकाश कम होता जा रहा है..।

तीसरा दीया

यह दीया एक ही था। अकेले ही झोपड़ी के बाहर टिमटिमा रहा था। उसमें तेल भी बहुत कम था। अंदर चारपाई पर लक्खू बीमार पड़ा था। उसका नाम भी कभी लक्ष्मीचंद हुआ करता था, जब वह गांव से शहर आया था। लेकिन अब तो मिल और बस्ती में सभी उसे लक्खू पुकारते थे। गरीब मजदूर और वह भी बेकार-बीमार.., भला कौन उसे लक्ष्मीचंद कहेगा।

उसकी पत्नी गंगा एक कोने में चूल्हे पर भात पका रही थी। घर में दो रुपये थे। उससे वह लक्खू की दवा ले आई। जहां काम करती थी, वहां मालकिन ने इसलिए निकाल दिया कि उसने दीपावली की छुट्टी मांगी थी। पंद्रह दिन बाकी थे महीना पूरा होने में, मगर पगार नहीं मिली, उल्टे कहा गया कि दीपावली के बाद आना। तभी उसके दोनों बच्चे भागते हुए आए। बड़ा सात वर्ष का- लच्छमन और छोटी चार वर्ष की थी मीना। लच्छमन बोला, मां, देखो तो सेठ जी के महल में कितने दीये जल रहे हैं और एक दीया तो इतना बड़ा है कि सब उसे दीयों का सम्राट बोलते हैं।

तभी छोटी मीना ने भिनक कर कहा, मां, मुझे जोर की भूख लगी है।

लच्छमन ने उसे डांट दिया, मुझे भी तो भूख लगी है। अच्छा मां बोलो तो, हमारे यहां एक ही दीया क्यों जल रहा है?

इसलिए बेटा कि हम गरीब हैं। तेल महंगा है। इतने दीये कैसे जलाएंगे।

तभी लक्खू जोर से चिल्ला कर बोला, अरे तो इस दीये को भी बुझा दे.., बोलते हुए उसे खांसी का दौरा पड़ा। तब भी वह बोलता रहा, लक्ष्मी सेठ लक्ष्मीदास के महल में जाएगी, मेरे घर नहीं। थोड़ी देर में तेल खत्म हो जाएगा तो दीया भी बुझ जाएगा।

तभी लच्छमन चिल्लाया, बाबा, जरा देखो तो हमारे दीये की लौ ऊंची होती जा रही है।

पागल हुआ है क्या? लक्खू उसे डांटने ही वाला था कि यह देख वह आश्चर्य से भर गया कि बाहर रखे दीये की लौ झोपड़ी के भीतर तक आने लगी थी।

तभी किसी ने झोपड़ी का द्वार खटखटाया। गंगा ने दरवाजा खोला तो देखा, सामने एक स्त्री खड़ी है। क्या है बहन?

एक रात ठहरने का ठिकाना चाहिए। बड़ी दूर से आई हूं।

तो अंदर आओ न!

स्त्री अंदर आई तो साथ प्रकाश भी आ गया। लक्खू ने कहा, हमारे पास तो बस यही झोपड़ी है बहन। तुम्हें तकलीफ होगी, लेकिन अंधेरा काफी हो गया है और इतनी रात गए तुम कहां जाओगी? हमारे यहां खाट भी एक ही है। लेकिन मैं अपना बिस्तर जमीन पर कर लूंगा। तुम इस पर सो जाना।

स्त्री जमीन पर आराम से बैठ गई। अरे नहीं भाई, तुम बीमार हो। तुम खाट पर ही सोओ। मैं तो धरती से निकली हूं और मुझे उसी में आराम मिलता है..।

गंगा ने कहा, लगता है, शहर में पहली बार आई हो। दीवाली का प्रकाश देखा?

स्त्री ने थके से स्वर में कहा, हां, दीवाली का प्रकाश भी देखा और अंधेरा भी..।

गंगा उसका मतलब न समझी। लक्खू सोचने लगा कि यह स्त्री अनोखी लगती है। सहसा उसे लगा, मानो छाती से खांसी का बोझ कम हो रहा हो। कुछ ही देर में वह आराम महसूस करने लगा। वह एकाएक उठ कर बैठा और बोला, गंगा, आज तो मुझे भी भूख लगी है। निकाल खाना हम सबके लिए।

गंगा ने चूल्हे से हांडी उतारते हुए धीरे से कहा, भात तो है, मगर साथ में कुछ नहीं है। बहन, तुम सूखा भात खा लोगी?

तुम मेरी चिंता न करो, स्त्री ने अपनी गठरी सामने रख दी, मेरे पास सब कुछ है। यह तो मैं तुम्हारे लिए ही लाई थी।

हमारे लिए? तुम हमें जानती हो?

मैं तुम सबको जानती हूं..।

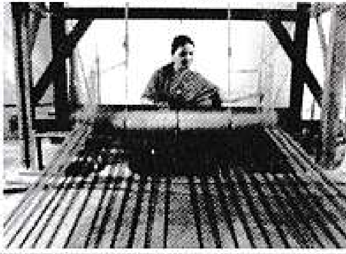
जैसे ही उसने गठरी खोली,



मिशन
ताना-बाना

लोक-शाला से ही शुरू होगी मिशन ताना-बाना

हम भारतीय समाज के जीर्ण-शीर्ण होते ताने-बाने को देख नहीं सकते। बल्कि उसे देखकर लज्जित होते हैं। बार-बार अपने से पूछते हैं कि क्या हमारी यही पहचान है? मन न मानता है न मानेगा। मन कहता है कि हम सदा एक थे और सदा एक रहेंगे। *यह देश महामानवों का महासागर है*– ऐसा गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने गाया था। अनेकता में एकता हमारी पहचान है– ऐसी उद्घोषणा विवेकानन्द ने दुन्दुभी बजा कर की थी। वह सच था और यह भी सच है कि हम एक ही रहेंगे। अब अपना रथ घेरकर हिन्दू-मुसलमान का राग अलापना बंद करेंगे। एक-दूसरे के लिए जीयेंगे और सब को अमन, चैन से जीने का हक देंगे। प्रश्न करने का और स्वस्थ रहने का अधिकार। जो समाज सवाल करता है वही स्वस्थ रहता है। तो सवाल करने से शुरू होगा मिशन ताना-बाना। ❑



मिशन
ताना-बाना

कामये दुःख तप्तानाम्...

लोक-शाला में बैठकर हमें हजारों लाखों लोगों के दुःखों को देखना होगा। इसे दर्द-दर्शन कहना होगा। महात्मा जी प्रतिदिन अपनी प्रार्थना सभाओं में यही प्रार्थना करते थे। यह दर्द-दर्शन हमको *निर्बल के बलराम* बनकर नहीं करना है बल्कि हमें निर्बल के हम-राम बन कर करना है। हम सब लोकसखा बन कर इस दर्द-दर्शन में अपने अभियान का मार्ग खोजेंगे। फिरकापरस्ती आती कहां से है और हमारे समाज को हम-तुम बनाती क्यों है? यह हमें पूछना और जानना होगा। एक तरफ हिन्दू मुसलमान होने का भेद और दूसरी तरफ छूत-अछूत होने की पीड़ा को हमें समझना होगा। सबके *योग-क्षेम* की चिंता के साथ सार्वजनीन अमन-चैन और सद्भावी समाज बनाने की दिशा में काम करना होगा। ❑

खाने की खूशबू फैल गई। बच्चे पास आ गए। स्त्री एक-एक कर चीजें निकालने लगी, ये हैं मक्खन लगी मकई की रोटियां। यह है चने का साग और गांव का असली घी और यह है दीवाली की मिठाई, ये हैं असली खोए के पेड़े, यह है दही। इस लुटिया में बच्चों के लिए गाय का दूध है, यह शहर का पानी मिला दूध नहीं है।

यह सुनकर सब हंस पड़े। इतना खाना देख लक्खू की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। रोटी का कौर बनाते हुए बोला, खाने को इतना सब कुछ हो तो और क्या चाहिए?

वे खाना खा रहे थे और उस अनजान स्त्री को कनखियों से देख रहे थे, जो न जाने कहां से मसीहा बन कर वहां आ गई थी।

खाना खाकर गंगा ने कहा, बहन, आज तो तुम्हारी बदौलत हमारी भी दीवाली हो गई। लक्खू हंसकर बोला, वर्ना तो दीवाला ही दीवाला था। तुम्हारा शुक्रिया कैसे करें बहन! तब स्त्री ने कहा, धन्यवाद तो मुझे करना चाहिए। मैं पूरे शहर में फिरी, किसी ने आसरा न दिया। सबके बड़े-बड़े घर थे, पर दिल का दरवाजा बंद था। मेरे लिए तो तुम्हारी झोपड़ी का दरवाजा खुला। अब से मैं हर बरस दीवाली पर तुम्हारे यहां आया करूंगी।

गंगा ने कहा, बहन, तुम तो कल सुबह चली जाओगी। हम तुम्हें याद कैसे रखेंगे? हमें तो यह भी मालूम नहीं कि तुम कौन हो? कहां से आई हो? स्त्री बोली, मैं तो यहीं तुम लोगों के पास रहती हूं। उन्हीं खेतों में, जहां लक्खू भैया के बाबा अनाज उगाते थे और उस कारखाने में, जहां लक्खू भैया मशीनों से कपड़ा बुनते हैं। जहां कहीं भी मेहनतकश इंसान हैं, मैं वहां रहती हूं। दीवाली की रात मैं हर उस घर में जाती हूं, जहां एक दीया भी मुझे इंसानियत व सच्चे प्रेम का झिलमिलाता हुआ दिखाई देता है।

थोड़ी देर झोपड़ी में सन्नाटा छाया रहा। अब इकलौते नन्हे से दीये का प्रकाश इतना तेज हो गया था कि झोपड़ी का कोना-कोना जगमगाने लगा था। दूर.. सेठ लक्ष्मीदास के महल में अंधेरा था। शायद बिजली चली गई थी और जेनरेटर भी फेल हो गया था। दूसरी ओर इनकम टैक्स अधिकारी लक्ष्मीकांत की बालकनी के दीये भी अब बुझ गए थे..।

देवी तुम्हारा नाम क्या है? गंगा ने पूछा। लक्ष्मी, स्त्री ने मुस्करा कर उत्तर दिया। ❑

१०२३, पहली मंजिल, सेक्टर ३८ बी,
चंडीगढ़-१६००३६

**१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकालमूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥**



सुन्दरलाल बोहरा



आज शिक्षा का स्तर परीक्षा में प्राप्त अंकों से मापा जाता है। एक शिक्षक जो कि शिक्षार्थियों का शिल्पी भी है और उनका संरक्षक भी। शिक्षक की जीवनशैली का सीधा प्रभाव शिक्षार्थी पर पड़ता है लेकिन इसके विपरीत शिक्षक अपना वेतन पाने और परीक्षार्थी को अच्छे अंक दिलाने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। इसके लिए वे कई अच्छे बुरे प्रयास भी करते हैं। शिक्षण संस्थाओं की भी स्थिति अधिक से अधिक आर्थिक अनुदान प्राप्त करने तक ही सीमित है। आज सनातन संस्कारों का संवर्धन करने वाली न सच्ची शिक्षा है न दीक्षा। प्रस्तुत आलेख में शिक्षाविद सुंदरलाल बोहरा यही सब बताने का प्रयास कर रहे हैं और यह कह रहे हैं कि इन सबके लिए शिक्षण संस्थाओं के मसीहा और उपभोक्तावादी चिंतन वाले शिक्षक दोनों ही जिम्मेदार हैं। ❑

न शिक्षा है न दीक्षा

वेतनभोगी होने के साथ-साथ एक शिक्षक शिक्षार्थियों का संरक्षक और चरित्र-निर्माता भी है। घर में बड़ों के आचरण का अनुकरण किया जाता है तो विद्यालय में शिक्षक की जीवन-शैली का। शिक्षक का औपचारिक आचरण विद्यार्थियों को गुमसुम करता है। आर्षकालीन गुरुकुलों में पारिवारिक वातावरण रहने से हर विद्यार्थी मेधावी होता था। गुरुकुलों की तुलना निवासी विद्यालयों से करना हास्यास्पद है। औपचारिकता में आत्मीयता का अभाव रहता है। विषय विशेष के लिये निर्धारित समय से अधिक शिक्षक, कक्षा में नहीं रुक सकता। घड़ी का समय ही शिक्षा का शिल्प है। कोई कुछ सीखे या न सीखे शिक्षक को अपनी नौकरी से मतलब। आज एक शिक्षक की योग्यता का मानदंड है उसके द्वारा उत्तीर्ण विभिन्न सांस्थानिक परीक्षाओं की अंक तालिकाएं। विद्यालय के बाहर शिक्षक के आपत्तिजनक आचरण का उसकी शिक्षण-शैली से कोई संबंध नहीं है। शिक्षक के शिक्षण-चातुर्य और उसकी चारित्रिक दृढ़ता में आज विरोधाभास है। सा विद्या या विमुक्तिये मात्र एक नारा है।

शिक्षा, विशेषत: तकनीकी और भेषज, आज धन्ना सेठों की नियोजन क्षमता का प्रतीक है। शिक्षा के व्यावसायिककरण से शिक्षक भी उपभोक्तावाद की चपेट में आ गये हैं। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाने वाले निजी शिक्षण केन्द्र मनमाने ढंग से शुल्क बटोरते हैं। अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थियों के पास अच्छी खासी दौलत होनी चाहिए। ऋणग्रस्त होकर भी लोग अपनी संतान को महंगी शिक्षा दिलवाते हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित वेतन श्रेणी पाने के लिए व नौकरी में स्थायी होने की लालसा रखने वाले शिक्षकों में होड़ लगी हुई है। सारा खेल परीक्षार्थी की स्मरण शक्ति का है। अनावश्यक तत्सम शब्दों और अनाहूत उद्धरणों के बल पर अनगिनत शोध प्रबंध स्वीकृत हो रहे हैं। बीस शोध प्रबंधों से सामग्री निकालकर इक्कीसवां अति प्रामाणिक शोध प्रबन्ध तैयार किया जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की वेतन श्रेणी के प्रलोभन से देश के विश्वविद्यालयों और उनसे संलग्न महाविद्यालयों में कोरे विद्वान ही विद्वान नजर आ रहे हैं। शिक्षक की चारित्रिक गुणवत्ता आज गौण है।

सांठ-गांठ और अवसरवाद पर जीवित भारतीय राजनीति ने शिक्षकों की आध्यात्मिक अहमियत को अस्थिर कर दिया है। निर्भीक और निष्पक्ष शिक्षक भी अपनी पारिवारिक मजबूरियों के कारण भ्रष्ट सरकारी



मिशन
ताना-बाना

ग्राम-सखी संवाद

अपनी संपूर्ण विनम्रता और विपन्नता के साथ हमने मिशन ताना-बाना की शुरुआत कर दी है। ग्राम-सखी संवाद के साथ। पहला संवाद गांव भंभौरिया में हुआ और दूसरा संवाद गांव झांई में। ऐसे संवाद आयोजित करके हम गांव-गांव में ग्राम-सखी और ग्राम-सखा चुनने का, उनके साथ आत्मीय रिश्ता बनाने की शुरुआत कर रहे हैं। इनके साथ आयोजित किये जाने वाले संवाद इनके प्रारंभिक प्रशिक्षण का काम भी करेंगे और अपनी ही पीड़ा को पहचान कर उसके निदान करने के प्रयास में सहयोग भी करेंगे। इस काम में बहुत सारे मित्रों और संस्थाओं एवं समर्पित सेवाभावी सरकारी अफसरों का भी सहयोग लिया जावेगा। ❑

अधिकारियों के आगे नतग्रीव हैं। अपने अंत:करण और आचरण को निष्कलंक रखने की चेष्टा करने वाले शिक्षक भी उपभोक्तावाद और मुद्रास्फीति से त्रस्त हैं। नक्शेबाजी और अवसरवाद का राज होने से संयमी शिक्षक संशयित हैं। एक कुलपति या उपकुलपति की योग्यता का मानदंड उसका सत्तारूढ़ लोगों से सामीप्य है। जो जितना ही तेज तिकड़मी होगा वह उतना ही ताकतवर तत्ववेत्ता गिना जायेगा।

सरकारी अनुदान की उदार नीति और आयकर अधिनियम में उल्लेखित विभिन्न छूटों का लाभ उठाकर आज नित नये विद्यालय-महाविद्यालय खुल रहे हैं। शिक्षकों की नियुक्ति एक औपचारिकता मात्र है। शिक्षण संस्थाओं के प्रबंधक अपने ही निकटतम लोगों को शिक्षक नियुक्त करने की कोई न कोई युक्ति निकाल लेते हैं। अहसानमंद अध्यापक को गुणवत्ता से क्या लेना-देना। वार्षिक परीक्षाओं में निजी शिक्षण संस्थाओं से जुड़े शिक्षक परीक्षार्थियों को नकल करने की छूट देते हैं क्योंकि यदि अपेक्षा से कम विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए तो कई कक्षायें बंद हो जायेंगी। कक्षाओं के बंद होने के साथ शिक्षक भी बेकार हो जायेंगे। अपनी रोजी-रोटी बचाने के लिये शिक्षक सभी प्रकार के उल्टे-सीधे तरीके अपनाते हैं। वार्षिक परीक्षा का अच्छा परिणाम ही एक शिक्षक के अच्छेपन की पहचान है। अच्छे परिणाम के अंदर की बात केवल परीक्षार्थी और उन पर परीक्षा-गृह में निगरानी रखने वाले शिक्षक ही जानते हैं। मेरे द्वारा दो महाविद्यालयों में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को निष्ठापूर्वक अंग्रेजी भाषा सिखाने के उपरांत भी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित वार्षिक परीक्षा में नकल करने की प्रवृत्ति की रोकथाम करना जोखिम भरा काम था।

आदर्श और अनुकरणीय अध्यापक वही है जो विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग है, जो संयमी, और संशयरहित है, जो सभी प्रकार के व्यसनों से मुक्त है, जो त्यागी और संतोषी हैं, जो अनुशासनप्रिय और दयालु हैं। जो एक माता की तरह ममतामय और एक पिता की तरह देखरेख करने वाला है, जो उपभोक्तावाद से अप्रभावित है, जो निर्भीक और निष्पक्ष निर्णायक है, जो गुटबाजी और खेमाबंदी से दूर रहता है।

सत्ताधारी अपनी ही आपाधापी में लगे हुए हैं। अधिकाधिक सरकारी संरक्षण और आर्थिक अनुदान की प्राप्ति ही भारतीय शिक्षण संस्थाओं का ध्येय है। सांस्थानिक सांठ-गांठ, मोर्चाबंदी और सत्तारूढ़ लोगों के प्रति वफादारी ही शिक्षकों की कर्तव्यपरायणता की कसौटी है। सत्ताधारियों के पास आत्म-परीक्षण के लिये समय नहीं है, शिक्षकों के आचरण को कानूनी प्रक्रिया द्वारा परिष्कृत करने वाले शिक्षाधिकारी स्वयं को सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान मान बैठे हैं, सरकारी अनुदान प्राप्त करने के लिये निजी शिक्षण संस्थाओं के प्रबंधक सभी तरह के हथकंडे अपनाने में लगे हुए हैं। उच्च स्तरीय तकनीकी और भेषज विद्या के क्षेत्र में भ्रष्ट तरीकों से अर्जित किये हुए धन का नियोजन करके ऊंची पहुंच के लोग तथाकथित

शिक्षण-शुल्क और दान बटोरकर मालामाल हो रहे हैं।

सरकारी तंत्र द्वारा अंग्रेजी भाषा को दिये जाने वाले प्रसुप्त प्रोत्साहन और अंतरराष्ट्रीय विपणन से जुड़े भारतीय व्यावसायिक प्रतिष्ठानों द्वारा नौकरियों में अंग्रेजी के ज्ञाताओं को वरीयता देने के कारण सवर्था महंगी अंग्रेजी माध्यम की शिक्षण संस्थाओं का दबदबा कभी कम होने वाला नहीं है। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के शिक्षकों को अपने अंग्रेजी के उच्चारण पर गर्व है जबकि ब्रिटिश कौंसिल और विभिन्न आंग्ला भाषा प्रशिक्षण के सरकारी और गैर सरकारी केन्द्रों के अनवरत प्रयासों के उपरांत भी अंग्रेजी का अंग्रेजी तासीरवाला उच्चारण भारतीय आंचलिक उच्चारण पर हावी नहीं हो पाया है। भारत में ऐसे विरले ही वक्ता या शिक्षक हैं जो कक्षा में अंग्रेजी वाग्वर्णों (phonemes) /f/, /v/, s/, /z/, का th का RP (Received Pronunciations) के नियमों के अनुसार उच्चारण करते हैं। भारत में शुद्ध अंग्रेजी उच्चारण के दावेदार अंग्रेजी उच्चारण की आड़ में अपनी घरेलु और आंचलिक बोली की तासीर से ग्रस्त हैं। वर्णसंकर विरासतवाली (Hybrid heritage) अंग्रेजी भाषा बड़ी लचीली और उदार है। अमेरिका, कनाड़ा और आस्ट्रेलिया में प्रचलित अंग्रेजी ही भारत में मान्य है। हिन्डलिश, पंजलिश, बांग्लिश या भारत के अन्य प्रान्तों की छाप लगी हुई अंग्रेजी शब्दावली कुछ सांस्थानिक लेखकों का हास्यास्पद प्रयास है। भारत में अंग्रेजी वर्तनी वाक्यों के नमूने रानी की अंग्रेजी (Queen's English) के ही हैं।

शिक्षकों की अंकतालिका गुणवत्ता को गौण और उनके औपनिषदिक अहम और आचरण को प्राथमिकता देने से ही भारतीय शिक्षा पद्धति में गुणात्मक परिवर्तन संभव है। बी.एड./ एम.एड. की डिग्रियां भावी अध्यापकों को स्थायी नौकरी दिला सकती हैं परन्तु उनके अन्त:करण और आचरण के विकारों को नहीं मिटा सकतीं। व्यवसायोन्मुख विशेष क्षेत्रों से जुड़ी शिक्षा में भी मानवोचित गुणों को प्राधान्य मिलना चाहिए। **आज सनातन संस्कारों का संवर्द्धन करने वाली न तो सच्ची सार्वजनिक शिक्षा है न दीक्षा- सर्वत्र हड़बड़ाहट और गड़बड़ाहट ही दृष्टि गोचर हो रही है।**

शिक्षा व्यक्ति को दृष्टि देती है, दीक्षा उसे दिव्य बनाती है। जब तक कक्षा में पढ़ाये गये आदर्शों और कक्षा के बाहर व्याप्त जीवन की वास्तविकता में संगति नहीं होगी तब तक विभिन्न शिक्षा उपयोगों द्वारा प्रशिक्षण के केन्द्रों में प्रशिक्षित हुए कितने वेतनभोगी प्रशासक सौ टंची सोना सिद्ध होते हैं ? जब सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार खत्म करने की नारेबाजी करने वाले लोग ही छल-बल से सत्ता में बने रहना चाहते हैं तो कौन-सा धर्मराज यम स्वर्ग-नरक का निर्णय करेगा? जब पाश्चात्य शिक्षा-पद्धति को मानक मानकर हम ही भारतीय शिक्षा की रीति-नीति तय करते हैं तो मैकॉले या अन्य विदेशी पर दोषारोपण करने में क्या तुक है? आत्म-परीक्षण करने से शिक्षा के सत्ताधारी सुधारक कतराते हैं।

एक शिक्षक और एक न्यायाधीश वेतनभोगी होने के साथ-



मिशन

ताना-बाना

सामने खड़ी चुनौतियां

भक्त शिरोमणि मीरा बाई के गुरु रैदास जो जाति से चमार थे, उन्होंने गाया था-

जो राम नाम कहि गावेगा।
वो भेद अभेद मिटावेगा।।

यह हमारी पहली चुनौती है कि समाज में जड़ें जमाये हुए भेद-अभेद को उखाड़ फेकें। ऐसे समाज की कल्पना करें जहां कभी कोई छुआ-छूत नहीं होगी। जहां कोई ऊंच-नीच नहीं होगी और जहां कभी कोई हिन्दु-मुसलमान नहीं होगा। सब इंसान होंगे।

दूसरी चुनौती है कि हमारा समाज सीखने वालों का समाज बनेगा। सोचने वालों का समाज बनेगा। सवाल करने वालों का समाज बनेगा और यही थाती विरासत के रूप में अपने बच्चों के लिए भी छोड़ जायेगा।

तीसरी चुनौती यह है कि हमारा समाज स्वावलंबी समाज होगा। हाथ फैलाने और भीख मांगने वालों का समाज नहीं होगा। ❑



मिशन
ताना-बाना

सामने खड़ी चुनौतियां

चौथी चुनौती यह है कि हमारा समाज सर्वथा अहिंसक समाज होगा।

पांचवी चुनौती यह है कि हमारे समाज में सर्वत्र शुद्ध भाईचारे का बोलबाला होगा। हर घर में एक ही प्रार्थना की जायेगी कि सभी सुखी हों, कही किसी से वैर हो नहीं।

छठी चुनौती यह है कि हमारा समाज सत्यनिष्ठ समाज होगा। सत्य का अन्वेषण करने वाला और सत्य का वरण करने वाला एक दूरदर्शी समाज होगा। नेति-नेति कहते हुए सदा अन्वेषण करने वाला और सीखने वाला एवं वैज्ञानिक दृष्टि से देख-दाख कर ही हर बात को स्वीकारने वाला समाज।

सातवीं चुनौती यह है कि हमारा समाज एक समतावादी समाज होगा। बार-बार यह देखने वाला कि समाज में कोई विषमता तो व्याप्त नहीं हो रही है। समता के प्रति सजगता समाज का स्वधर्म होगा। ❑

साथ स्व-विवेक को भी निष्पक्ष और निष्कलंक रखने के अधिकारी हैं। समाज-सुधार के अनगिनत कानून बने हुए हैं परन्तु उनमें से कितने कानूनों का निष्पक्षता और नेक इरादों से क्रियान्वयन होता है?

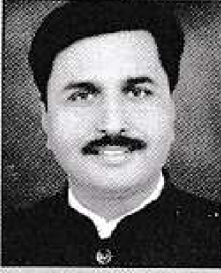
ब्रह्मांड में उपस्थित असंख्य पिंडों में अंतर्भूत क्षरण-भरण की निरंतर क्रिया का नाम ही काल है। यही काल पृथ्वी पर ज्ञेय-अज्ञेय, सुप्त-असुप्त परिवर्तन का मूल कारण है। धरा पर जीवन इसी काल की क्षरण-भरण क्रिया से प्रभावित है। पृथ्वी पर मानव जीवन व चिन्तन की ऊबड़-खाबड़ कहानी काल की ही शब्दमय अभिव्यक्ति है। वेदांतियों का शब्दातीत ब्रह्म काल का नियंता है। दार्शनिक परिपक्वता के द्योतक वेदों-उपनिषदों ने नेति नेति का उच्चार करके मानव-चिन्तन की चंचलता को कील दिया है। पृथ्वी द्वारा सूर्य की निरन्तरता परिक्रमा करने के परिणामस्वरूप पृथ्वी पर स्थित पदार्थों और प्राणियों में परिवर्तन की प्रक्रिया चालू रहती है। पृथ्वी की परिक्रमा प्रवृत्ति और मनुष्य की चिन्तन प्रक्रिया में अटूट संबंध है। मानव मस्तिष्क में संकल्पों-विकल्पों का कोलाहली कुंभ मेला कभी भी नहीं बिखरता। तत्व-चिन्तन के नये-नये विचारों, वैज्ञानिक आविष्कारों और भवनों व वस्तुओं के आकारों में निरन्तर नवीनता दृष्टिगत होना पृथ्वी के सूर्य की अबाध परिक्रमा के ही परिणाम हैं। मानव की चिन्तन-प्रक्रिया को उत्तेजन देने वाले वायु और जल तत्व हैं। यदि मनुष्य के शरीर में प्राणवायु का निर्धारित अनुपात कम हो जायेगा तो मस्तिष्क में होने वाली वैचारिक चहल-पहल रुक जायेगी। मानव-चिन्तन से प्रसूत सिद्धांत और आदर्श कालबाह्य नहीं हैं। इस कारण समाज और मानव मूल्यों में व्यक्त संशय व संक्राति का कभी भी अंत नहीं हो सकता।

सांस्थानिक शिक्षा के भाग्य-निर्धारण से जुड़े लोगों को अंतर्मुखी होकर ही शिक्षा के मानकों को लागू करने की सिफारिश करनी चाहिये। देश में व्याप्त अशांति और असंतोष के लिये विकासग्रस्त अंत:करण वाले सत्ताधारी, सार्वजनिक और निजी शिक्षण संस्थाओं के मदमस्त मसीहा और उपभोक्तावादी चिन्तन वाले शिक्षक संयुक्त रूप से उत्तरदायी हैं। जोड़ तोड़, सांठगांठ, और कूट-धर्म को ही जीवन का ध्येय समझने वाले छद्म आदर्शवादियों को अपना अन्त:करण विकाररहित रखना चाहिए। देश में रूढ़ आर्थिक और सामाजिक विषमताओं के रहते सर्वजन सुखाय: सर्वजन हिताय: की समयखाऊ सांस्थानिक शिक्षा और दीक्षा की दिव्यता का अन्त करने वाले वार्षिक दीक्षांत समारोह हमारे आध्यात्मिक खोखलेपन को ही उजागर करते हैं। ❑

२२/१७३५, ए-ऋतुराज वसंत हाउसिंग सोसायटी, जूनी एमएचबी कॉलानी, प्रधान डाकघर के पास, गोराई रोड, बोरीवली (पश्चिम) मुंबई-४०००९१

हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि।
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ। नानक हुकमै जे बुझै त हउम कहै न कोइ।।

सचल पुस्तकालय सह पाठशाला



धनंजय राय



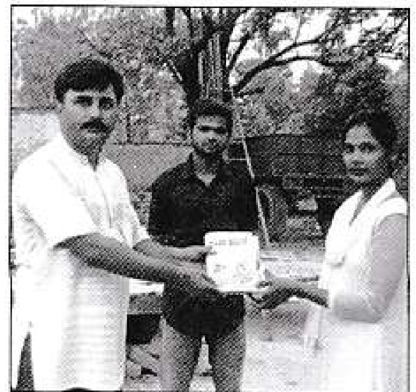
श्री धनंजय राय सामाजिक कार्य से जुड़े हैं। इन्होंने विशेष रूप से शिक्षा, कृषि, पर्यावरण से संबंधित क्षेत्र में कार्य किया है। धनंजय राय उत्तर प्रदेश के गांव हथोज में रहते हैं। इन्होंने अपने आसपास के १० गांवों में संपर्क कर एक सचल पुस्तकालय खोला है। यह गांव मजदूरों का गांव है। जहां कोरोना वायरस में काम बंद हो जाने के कारण गांव को बहुत तंगी से गुजरना पड़ रहा है। इसी महामारी के चलते फसलें भी खराब हो गई हैं और इन सब का सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है। इनका कहना है कि इस पुस्तकालय में राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति की पुस्तकों का भरपूर सहयोग मिला है। बच्चों को यह किताबें बहुत पसंद आई हैं। अपने अनुभव को सांझा कर रहे हैं श्री धनंजय राय। ❑

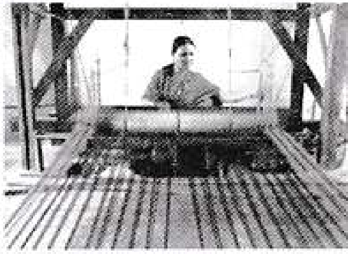
लगातार हो रही भारी बारिश से ग्राम कुंज विद्यापीठ परिसर में जलजमाव के चलते तथा कोरोना महामारी के इस दौर में एक जगह बच्चों को एकत्र करना संभव नहीं हो पा रहा था। कुछ सूझ नहीं रहा था कि बच्चों तक कैसे पहुंचा जाए।

इस बीच व्हाट्सएप ग्रुप में आदरणीय श्री अखिल जी का एक संदेश Guatemala Teacher Pedals Classroom To Students आया। इससे प्रेरित होकर हम लोगों ने भी सचल पुस्तकालय सह पाठशाला कार्यक्रम की कार्य योजना बना ली और तय हुआ कि पुस्तकालय से अक्षर ज्ञान, अंक ज्ञान, प्रेरक कहानियां, आसपास के पर्यावरण एवं परिवेश के प्रति जागरूक करने वाली पुस्तकों, नैतिक शिक्षा एवं मूल्य परक पुस्तकों, स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकों, विज्ञान की पुस्तकों का एक सेट बनाया जाए तथा इसे हर बच्चे के द्वार तक पहुंचाया जाए।

आसपास के गांव के प्रत्येक बच्चे से तथा परिवार से मिलकर पठन-पाठन के कार्य को संचालित किया जाए। आस-पास के १० गांवों हथौज, कुशहा, सोनपुरवा, धनौती, दुरौंधा, अजउर, बाबूरानी, अजनेरा, मोहनपुरा, भूड़ाडीह में जन संपर्क करके इस कार्यक्रम की जानकारी दी गई तथा बच्चों को एकत्र करने का स्थान भी चिन्हित किया गया। धनौती के युवा साथी सत्येंद्र राजभर, सत्यप्रकाश राजभर, आशीष राजभर आवश्यक समय देने को भी तैयार हो गए तथा दूसरे ही दिन से बच्चों को इकट्ठा करके पठन-पाठन का कार्य प्रारंभ कर दिया। आज वहां पुस्तकों का सेट पहुंचाया गया।

बच्चों और अभिभावकों का उत्साह हम लोगों के लिए प्रेरक रहा। इस अवसर पर बच्चों को पुस्तक वितरित करते हुए धनौती के ग्राम प्रधान विजयशंकर राजभर ने कहा कि धनौती गांव मुख्य रूप से मजदूरों का गांव है। कोरोना महामारी में काम बंद हो जाने के कारण यह गांव बहुत ही तंगी से गुजर रहा है। दूसरी तरफ जिन लोगों के पास थोड़ी खेती बाड़ी है वह भी भारी बारिश के चलते डूब गयी हैं। धान की फसल शत-प्रतिशत





मिशन
ताना-बाना



घर-घर में पोथी घर

बहुत छोटे स्तर पर हमने स्वाध्याय की नींव रखने और निरंतर सीखने वालों का समाज बनाने की दृष्टि से घर-घर में पोथी घर खोलना प्रारंभ कर दिया है। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा प्रकाशित नवसाक्षरों के लिए लिखी गई लगभग ७० पुस्तकें घर-घर में पहुंचा दी हैं। कई घर ऐसे हैं जिन्होंने इन पुस्तकों की सहयोग राशि भी स्वयं स्वेच्छा से दे दी है। हम कई मित्रों से मांगकर एवं बड़े-बड़े प्रकाशकों से निवेदन करके पुस्तकें मंगाकर घर-घर पहुंचाने के प्रयास में जुट गये हैं। यह मिशन ताना-बाना की विनम्र शुरुआत है। ❑

डूब गई है। इस प्रकार यह गांव प्रकृति की दोहरी-तिहरी मार को झेल रहा है। इस विकट परिस्थिति का सबसे ज्यादा कुप्रभाव बच्चों पर ही पड़ रहा है। ऐसे में ग्राम कुंज की इस पहल ने, न केवल बच्चों में बल्कि अभिभावकों में भी एक नया उत्साह भर दिया है। इससे बच्चों में आनंद के साथ साथ सृजनात्मकता और रचनात्मकता भी विकसित होगी। हम इस पहल के साथ हर संभव मदद के लिए तैयार हैं। कुल ३१ पात्र बच्चों को पुस्तकें वितरित की गई। अजय सहाय द्वारा उपलब्ध कराई गई पुस्तक स्वर-माला तथा रमेश थानवी जी द्वारा राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा समिति की पुस्तकें : 'रहमान भाई', खुद करते थे बापू, डॉक्टर सरला, वृक्ष-कथा, मेरी गाय, गरीब नवाज, बच्चों की सेहत, परहित सरिस धर्म नहिं भाई, विनोबा इत्यादि पुस्तकों को वितरित किया गया। बच्चों को किताबें बहुत पसंद आई तथा कुछ अन्य किताबों की मांग भी रखी गई। सचल पुस्तकालय सह पाठशाला के आरंभ का प्रथम दिन बहुत ही प्रेरक रहा है। सचल दल में धनंजय राय, राजेंद्र शर्मा एवं अंजनी कुमार गिरी थे। कल दुरौंधा गांव की बारी है।

आज ग्राम कुंज विद्यापीठ, हथौज, जनपद - बलिया, उत्तर प्रदेश के प्रांगण में महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता, आध्यात्मिक चिंतक, भूदान आंदोलन के प्रणेता, भारत रत्न पूज्य विनोबा भावे की १२५ वीं जयंती मनाई गई । इस अवसर पर उपस्थित जनों ने संत विनोबा भावे को हृदयांजलि अर्पित की तथा एक भजन के माध्यम से संपूर्ण जगत में प्रेम प्रसार का संकल्प लिया। हम लोगों के अभिभावक राजेंद्र शर्मा ने बच्चों के साथ ग्राम कुंज विद्यापीठ परिसर में पौधारोपण किया। ❑

ग्राम व पोस्ट : हथौज,
जनपद : बलिया, उत्तर प्रदेश श्र
PIN: २७७३०२





प्रो. विपिन विहारी वाजपेयी



प्रोफेसर बिहारी वाजपेई भव्य व्यक्तित्व के धनी थे। एकदम बादशाह की तरह दिखते थे। वे लोगों के दुखों में दुखी और सुख में सुखी होने वाले थे। स्वभाव से गंभीर थे । वे बीकानेर में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के व्याख्याता रहे। जब तक वेट प्राचार्य रहे वे पूरे स्टाफ को सक्रिय स्वाध्यायी बनाने की कोशिश में जुटे रहे और उनके साथ शिक्षक सामाजिक परिवर्तन पर सतत चिंतन करते रहे। शिक्षकों प्रशिक्षकों के प्रति उनके मन में विशेष प्रेम था और कड़ी मेहनत उनके जीवन का अभिन्न अंग था। वे सचमुच नायाब थे नबी थे। आचार्य विचार और भाषाई शुद्धता श्रेष्ठता उनके प्रिय विषय थे । वे सरल सहज और विनय भाव के कारण नोबेल थे। प्रस्तुत लेख में लेखक उनके साथ बिताए पलों को साझा कर रहे हैं। पाठक पढ़कर प्रेरणा पा सकेंगे, लाभ उठा सकें। ❑

था जो कभी नबी

कुदरत कहां कहां से आए लोगों को कैसे मिला देती है, इसका उदाहरण है विपिन विहारी वाजपेयी के परिवार से मेरा मिलन। याद करता हूं तो आश्चर्य भी होता है, सिहरन भी और पुलकन भी। आश्चर्य यों कि वे कहां और मैं कहां उम्र भेद भी और स्तर भेद भी। सिहरन यों कि ऐसे भव्य व्यक्तित्व का सान्निध्य पा कर भी मैं उनसे जी भर के कुछ सीख नहीं पाया, उल्टे कभी-कभी बेवकूफियां भी कीं। पुलकन यों कि जो भी हो मैंने उनका भरपूर स्नेह पाया, और उन्होंने हमारे बीच के संबंधों को हर बार सकारात्मक दृष्टि से ऊंचा स्थान प्रदान किया और सार्थक संवाद की प्रक्रिया अपनाई।

उनके कारण अवधजी, कैलाशजी से घनिष्टता स्थापित हो गई और आनंदजी से परिचय का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनके कारण भरत, ध्रुव, अनिरुद्ध और उनकी माताजी (विपिनजी की पत्नी) हमारे परिवार के सदस्य हो गए। उनके ही कारण भरत-ध्रुव के मामाजी हम सब के मामाजी हो गए। इनकी खुशियां हमारी खुशियां हो गईं, इनकी त्रासदियां हमारी त्रासदियां हो गईं।

विपिनजी शिक्षा विभाग को या शैक्षिक-प्रशासनिक नीतियों को जिन दिशाओं में जाते देखना चाहते थे उसमें शिक्षामंत्री या सक्षम अधिकारियों को बाधक बनते देखते तो इतने दु:खी हो जाते कि उनकी आंखें छल-छला आती थीं। परिवारजन तो परिवारजन, वे अपने किसी सहयोगी या किसी दूसरे आत्मीय को अधिक कष्ट में देखते या अधिक खुशी में देखते तो उनकी आंखें छलछला आती थीं। नाराज भी होते थे पर इतना ही कि चेहरा तमतमा कर लाल हो जाता था। ऐसे कूटनीतिज्ञ नहीं थे कि भीतर भाव कुछ और, बाहर कुछ और।

एक रोज एक शिक्षामंत्री ने माउंट आबू सम्मेलन में मधुर-मधुर शब्दों से एक शिक्षा निदेशक की प्रशंसा की। विपिनजी मेरे पास बैठे थे। शिक्षामंत्री बोल कर बैठे तो विपिनजी ने मेरी ओर झुक कर थोड़ा मुस्करा कर कहा, अब ये निदेशकजी जरूर जाएंगे और वे निदेशकजी चंद दिनों बाद ही किसी अन्य विभाग को स्थानान्तरित हो गए। विपिनजी ने जो बात तीक्ष्ण दृष्टि से पहचान ली उस बात को वे निदेशकजी पहचान नहीं पाए। पहचानते तो शेष दिन प्रमुदित मुद्रा में कदापि नहीं रहते। इस मामले में वे भी विपिनजी की तरह भीतर का भाव चेहरे पर छिपा नहीं सकते थे।

एक अंतर और देखा-चेहरे का भाव कुछ भी हो, वाणी का गजब नियंत्रण था। विपिनजी विष का

घूंट पी कर भी वाणी में कटुता नहीं आने देते थे। वे निदेशकजी तब तो प्रमुदित रहे, समझे नहीं इस कारण, लेकिन जब अचानक स्थानांतरण हो गया तो उसके बाद जब भी मुझसे मिले कटुता ही कटुता थी।

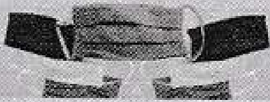
विपिनजी हृदय से भोले शंकर थे, चाल से सोहराब मोदी थे। भव्य व्यक्तित्व था। धोती पहनते हुए भी ढीले-ढीले नजर नहीं आते थे, एकदम चुस्त और शाही चाल से चलते थे। मुझे तो बार-बार सोहराब मोदी या पृथ्वीराज कपूर की ही याद आ जाती थी। इतना गांभीर्य था उनकी कसी हुई धोती वाली चाल में, व्यक्तित्व, भाषा और स्वभाव में। सचमुच बादशाह थे। लेकिन तभी तक जब आंखें डबडबा न आएं। आंखें डबडबाते ही वे सीधे धरती पर थे, सामान्य जन का हिस्सा, बिल्कुल हू-ब-हू उनके जैसा ही- जन-मन के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी होने वाला।

मानवी और बादशाही शैली के अद्‌भुत मौलिक मिश्रण का एक रूप आपको और बताता हूं। मैं शिविरा-नया शिक्षक का दफ्तर लेकर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय भवन (बीकानेर) के ऊपरी दक्षिण भाग में बैठता था। उसी छोर पर नीचे एक बहुत बड़ा लम्बा कमरा था। जिसमें एक रोज मंच पर महाविद्यालय के प्राचार्य विपिनजी भाषण कर रहे थे और मैं सामने काफी दूर वाली कुर्सी पर लगभग बीच में बैठा था। पड़ौस में बैठे एक प्राध्यापक की तरफ गई कि मेरे कानों में लहराती गूंजती एक गंभीर आवाज आई 'था जो कभी नबी' और मैं पहले चकराया किया कि किसकी चर्चा करने लगे विपिनजी, कि मुझे पलक झपकते समझ आ गया कि कृपालु प्राचार्यजी सहृदयता पूर्वक संकेत लिपि की छद्म शैली में थानवी को अर्थात् मुझे ही बात न करने की शाही संगीत सुना रहे हैं। फिर गूंजा वही शब्दयुग्म, सोहराबियन टंकार के साथ-था जो कभी नबी। और मैं सकपका कर अटेंशन। शीघ्र ही सावधान हो गया। भाषण यथावत चलता रहा। मैं ही समझा और वे ही समझे। आज उनकी याद आती है तो अनुभव होता है कि कौन 'नबी' था वे या मैं? मेरे लिए वे सचमुच नबी ही थे। मैं तो केवल नाम का 'थानवी' हूं।

मैं सरल शब्दावली पसंद करता हूं। वे तत्सम के शौकीन। मैं जहां 'शीघ्र' या 'जल्दी' शब्द से काम चलाता हूं वहां वे तत्काल 'त्वरा' में पहुंच जाया करते थे। उनका खयाल था कि क्लिष्ट संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली बिना 'स्तरीय' प्रभाव पैदा नहीं हो सकता। शाही व्यक्तित्व, उन्नत चाल और उन्नत भाषा। उन्होंने साधना की थी। शायद उनके पुरखों ने भी साधना की थी। यही कुलीनता अंशतः किंचित-किंचित उनके अनुज अवधजी, कैलाशजी में भी झलकती है। हाव-भाव, चाल-ढाल, हर जगह। विपिनजी तो तपे-तपाए साधना-सिद्ध पूरे नोबल थे, नबी थे, कुलीन थे। आचार-विचार और भाषायी शुद्धता व श्रेष्ठता पर बल, बल ही नहीं अतिबल, उनका प्रिय



मिशन
ताना-बाना



घर-घर में स्वावलंबन

हर घर स्वावलंबन *'मिशन ताना-बाना' का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। यह वर्तमान परिस्थितियों की मांग है। समय का तकाजा है। कोरोना काल में बहुत से ऐसे परिवार हैं जिनके काम धंधे छूट गए हैं। वे बेरोजगार हो गए हैं। ऐसे ग्रामीण परिवारों की मदद के लिए महिलाओं का समूह बनाकर उन्हें काम दिया जा रहा है। मास्क सिलाई का काम।*
कपड़ा, इलास्टिक व धागा समिति उपलब्ध कराती है और उन्हें सिलाई करने का मेहनताना दिया जाता है। इससे उनकी थोड़ी मदद हुई है। हर महिला अपने परिवार का सहारा बन गई है। उनमें स्वावलंबन से एक नया आत्मविश्वास जागा है। जरूरतमंद ग्रामीण महिलाओं द्वारा बनाए मास्क हम लोगों तक पहुंचाने का प्रयास कर रहे है। ❑

विषय था, कि व्यसन था। सुना था कि जब वे व्याख्याता थे इसी शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय (बीकानेर) में, तब भाषायी शुद्धता के आग्रह के कारण इनके शिष्य छात्राध्यापक त्राहि-त्राहि कर उठते थे। नंबर देना हो तो प्रथम श्रेणी (६०) अंक इन से प्राप्त करना खासा दुस्वप्न माना जाता था और तैयारी के पाठ तो जब देखो तब 'निरस्त' होना आम बात थी, स्तरीयता जो प्रिय थी।

सरलता, सहजता और विनय भाव के कारण भी 'नोबल' थे। विनम्रता इतनी कि घर में कार होते हुए भी पैदल ही मेरे घर चले आते थे। बातचीत में हर बार 'जी' या 'जी हां' 'जी हां' बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ते थे। शायद इसी कारण जो भी मिलता उसको इनके चेहरे पर विनय और विजय दोनों भाव खेलते दिखाई देते थे।

अब मैं बताता हूं कि इन्होंने बड़े विनय भाव की और मुझे बुला कर बी.एड./एम.एड. के तमाम छात्राध्यापकों तथा महाविद्यालय के तमाम स्टाफ को उत्तरी छोर के बड़े लम्बे हॉलनुमा कक्ष में बुलाकर मुझ से उस संपादकीय के भाव प्रसंग पर विस्तार से मेरी राय रखने को कहा। मैंने प्रमुदित मन से भारी भाषण दिया। बी.एड./एम.एड. नामक शिक्षक प्रशिक्षण पर मेरे वर्षों के अनुभव से उत्पन्न विलोम विचार थे। मैं उनकी गर्जना जानता था फिर भी मौका मिला तो मैंने खुल कर मेरे विचार रखे, विलोम विचार। अब प्राचार्यजी विपिनजी की बारी थी। खूब प्रशंसा के पुल बांध-बांध कर उन्होंने शिक्षक प्रशिक्षण के पक्ष में अपने भी विचार पूरे मुक्त भाव से रखे और विनय की धारा आद्यंत बनाए रख कर मेरे तर्कों को तार-तार कर डाला। स्पष्ट ही आद्यंत विनय भाव रख कर के भी वे विजयी हुए। मुझे भी बहुत आनन्द आया और यही आनंद व्यक्त करते हुए मैंने अपनी असहमति के साथ हार्दिक आभार व्यक्त किया। उठा-उठा कर वो पटका वो पटका कि जिन्दगी भर याद रहेगा। सचमुच आज भी याद है।

ऐसे महान् थे मेरे बड़े भाई विपिन विहारी वाजपेयी। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय बीकानेर के प्राचार्य रहे और शिक्षकों के लिए राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग के उच्चतम पद प्राथमिक एवं माध्यमिक निदेशालय (राजस्थान) बीकानेर के अपर निदेशक पद पर भी पहुंचे सभी जगह अपने ज्ञान, विद्वता, व्यक्तित्व, व्यवहार और सौम्य संबंधों की छाप छोड़ी। क्या-क्या याद करें। नेता हो या अधिकारी, शिक्षा प्रणाली को आमूल चूल बदलने की मांग तो आए दिन ही आदमी करता रहता है लेकिन उपाय क्या है। विपिनजी के पद पर भी एक नहीं अनेक आदमी आए और आकर चले गए। आगे भी आ रहे हैं, आएंगे। लेकिन जो चिंता विपिनजी ने की और जो कदम उन्होंने उठाए वैसा कोई विरला ही करता है। वे जब तक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य रहे, लगातार पूरे स्टाफ को सक्रिय स्वाध्यायी बनाने का कोई न कोई



जितना आध्यात्मिक विचार मैंने पढ़ा है,
जितना मैं चिंतन कर सका हूं,
उसका अगर सार एक शब्द में लाना है,
तो वह 'गुण-ग्रहण' इस शब्द में आता है।
सतत गुण खींचते जाना,
गुण-वर्धन करना,
गुण-स्मरण करना,
गुण-भावना करना
मनुष्य की उन्नति के लिए सर्वोत्तम उपाय है।
मैंने इसी को भक्ति माना है।
भगवान इस दुनिया में प्रकट हैं, गुणरूपेण।

-विनोबा



ऐसा कहते हैं,
ऋजु–कुटिल नाना वेश लेकर
परमेश्वर लीला कर रहा है।

लेकिन मेरे लिए,
कुटिल किंवा टेढ़ा कहीं भी नहीं;
जो है वह ऋजु, सरल ही है।

ऊपर–ऊपर से काम–क्रोध
अथवा द्वेष–ईर्ष्या–असूयादि से
प्रेरित होकर व्यवहार करते हुए
कोई दीखे
तो भी उनके उन विचारों की
जड़ में
शुभाकांक्षा ही भरी हुई है,
ऐसा मैंने उनके हृदय में प्रवेश
करके देख लिया है।

विकारों की जड़ में छिपी ब्रह्म–
प्रेरणा–
विकारों की ब्रह्माकारता
चीह्नने के कारण
मुझे सहज ही सबके लिए
सहानुभूति होती है।

–विनोबा

प्रयत्न, कोई न कोई आयोजन करते ही रहे। कभी 'स्कूल इज डेड' पर संगोष्ठी तो कभी 'रीडिंग' पर संगोष्ठी तो कभी 'शिक्षक सामाजिक परिवर्तन का अभिवर्तक' आदि विषय पर। विषय वे चुनते रहे और पूरे स्टाफ को उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने को जगाते रहे। शिक्षकों–प्रशिक्षकों के प्रति उत्थान के लिए अनथक चिंतन तथा अनथक परिश्रम करना और कराना उनकी जीवन शैली का अभिन्न अंग था। जो टाइप कराते या स्टेंसिल दो–दो, तीन–तीन बार वापस करना होता था। सतीशजी गोयल जैसे ऊर्जावान सहायक उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। रात–रात भर उन्होंने अनेक बार टाइप मशीन पर टाइप किया या स्टेंसिल काटे लेकिन कभी उफ नहीं की। शिविरा–नया शिक्षक जिन कई बहसों को चलाते या जिन नवाचारों या नई दिशाओं का संकेत करते–समाचार देते, उन पर ध्यान देने की प्रेरणा वे अपने सहयोगियों को निरंतर देते रहते थे।

पत्रोत्तर देने में भी कभी कृपणता नहीं दिखाई। दमे की तकलीफ थी। हम सब यह जानते थे। इस तकलीफ के बावजूद सारी डाक खुद देखते थे। नौकरी में थे तो सारे ड्राफ्ट स्वयं बनाते थे या डिक्टेशन देते थे और कई पत्र तो स्वयं अपनी हस्तलिपि में लिखते थे। हस्तलिपि शुद्ध, साफ और कलात्मक थी। सेवानिवृत्त होने के बाद भी मैंने जब भी उन्हें उदयपुर पत्र लिखा तो तत्काल उनकी हस्तलिपि में लिखा विस्तृत पत्र प्राप्त हुआ। उदयपुर जाना हुआ था तब देखा था कि दमे का दौरा जब आता था तब वे खांसते खांसते दोहरे होते थे और बहुत कष्ट पाते थे। वह याद कर मैंने उन्हें पत्र लिखने की इच्छा को दबाए रखा। फिर तो एक रोज समाचार मिला कि वे हमें सामाजिक परिवर्तन का अभिवर्तक बनने की प्रेरणा देकर खुद किसी नए संसार की खोज में कूच कर गए हैं। जब तक रहे हमें झिंझोड़ते रहे, जगाते रहे। जरूर, जागे होंगे कोई तो, उनकी प्रेरणा पा कर उनका परिश्रम देख कर और उनके प्रभाव में रह कर। सचमुच वे नबी थे, लीला करके चले गए। बता गए कि 'था जो कभी नबी' कौन था। थानवी ने तो खाली उनकी लीला देखी और आपको कथा कही। बहुत याद आएंगे, बहुत शक्ति देंगे, बड़े भाई साहब विपिनजी। ❑ –शिवरतन थानवी की पुस्तक 'शिक्षा सर्वोपरी' से साभार। वाग्देवी प्रकाशन

स्वतंत्रता के असली शत्रु

आन्तरिक और बाहरी स्वतंत्रता को अलग–अलग नहीं किया जा सकता। किसी भी देश से अधिक बड़ा है जीवन और कोई भी देश सचमुच तभी स्वतंत्र है या हो सकता है जबकि जीवन के जो गहरे नियम हैं उनका वह साक्षात्कार कर लेता है और अपने आप को उनके अनुकूल बना लेता है। इस दृष्टि से आज कोई भी देश पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं है। ❑

–जे. कृष्णमूर्ति

मन में स्नेह भर दे, वही सच्ची शिक्षा

चैतन्य नागर



जब हम सुनते हैं कि किसी कम शिक्षित इंसान ने घरेलू हिंसा की, अपनी पत्नी या पति, या सहकर्मियों के साथ बदसलूकी की, राह चलते लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया तो हमें उतना आश्चर्य नहीं होता, पर जब यही काम कोई डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर या बड़ा अधिकारी करता है तो लोगों को बड़ा ताज्जुब होता है। ऐसा क्यों?

हमारी शिक्षा व्यक्ति का एक तरफा विकास करने पर ही जोर देती है। व्यक्ति का समेकित, सर्वांगीण सम्पूर्ण विकास इसके उद्देश्यों में शामिल नहीं रहा है। इनका उल्लेख स्कूलों के विज्ञापनों और पत्रिकाओं में जरूर होता है, पर जमीनी हकीकत एक अलग कहानी कहती है। जब शिक्षा समेकित विकास की बात भी करती है, तो वह कई क्षेत्रों में प्रतिभा विकसित करने की बात करती है। वह छात्र को कई अलग-अलग गतिविधियों में उलझा कर रखने को ही उनका समेकित विकास मान लेती है। वह छात्र के और अधिक करने, कुछ और अधिक बनने पर जोर देती है। हमारी शिक्षा बौद्धिक उपलब्धि या 'इंटेलीजेंट कोशेंट' (आईक्यू) पर अधिक जोर देती है जबकि बुद्धि या विचारण समूचे मस्तिष्क के एक बहुत ही सीमित क्षेत्र में होने वाली घटना है।

सिर्फ विचार और बुद्धि के संवर्धन पर जोर देने वाली शिक्षा, पुस्तकों में उपलब्ध लिखित शब्द को ज्ञान का एक मात्र स्रोत मानने वाली शिक्षा ऐन्द्रिक बोध को कमजोर और भोथरा कर देती है। यह एक बहुत बड़ा कारण है कि हमारे सामने एक असंवेदनशील पीढ़ी निर्मित हुए जा रही है और हम इसके कारणों की तह तक नहीं जा पा रहे। जहां पुस्तक से मिलने वाला शाब्दिक ज्ञान कीमती हो जाए, वहां उसी अनुपात में संवेदनशीलता घटेगी। संवेदनशीलता का संबंध है संवेदनाओं, इन्द्रियों की सक्रियता से। जब विचार और बौद्धिकता पर अधिक जोर दिया जाएगा, वहां इन्द्रियों की क्षमता घटती ही है।

समेकित शिक्षा को बुद्धि के साथ भावनाओं और इन्द्रियों की तीव्रता को विकसित करने और उसे कायम रखने की जिम्मेदारी भी लेनी होगी। 'आईक्यू' के साथ एक एक भावनात्मक स्तर भी होता है जिसे 'इमोशनल कोशेंट' या 'ईक्यू' कहते हैं। क्या हम सिर्फ बुद्धि के संवर्धन पर जोर दे रहे हैं? क्या बच्चों के भावनात्मक विकास, उनके आपसी संबंधों, घरेलू रिश्तों वगैरह को पूरी तरह अनदेखा नहीं कर रहे? विचार अक्सर पूरी तरह बौद्धिक हो जाते हैं, या पूरी तरह भावुक और इस तरह का एकतरफा जीवन हमारे लिए कई बाधाएं खड़ी करता है।

इससे जुड़ा दूसरा मुद्दा है गलत मूल्यों के सम्प्रेषण का। एक अच्छा पेशा या नौकरी इंसान की मूलभूत आवश्यकताओं के क्षेत्र में आते हैं। बुनियादी सुरक्षा देह, मन और मस्तिष्क के लिए जरूरी है और इसके बगैर अस्तित्व ही संभव नहीं, पर यदि कुछ लोग बहुत अधिक सफल होना चाहते हैं और उनका बिलकुल भी ख्याल नहीं रखते जो तथाकथित रूप से 'असफल' हैं तो इसका मतलब हम लगातार एक रुग्ण समाज की ओर बढ़ रहे हैं, प्रतिस्पर्धात्मक मूल्यों को पोषित कर रहे हैं। एक बहुत ही शिक्षित और संवेदनशीलता पश्चिमी महिला के साथ हाल ही में हुई बातचीत याद

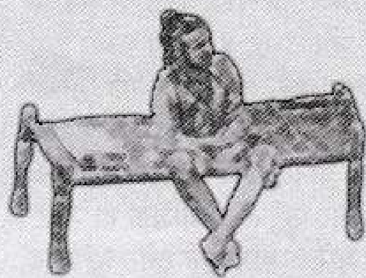
आती है। उसने कहा कि मैं जीवन में बहुत सफल हो सकती हूं, धन और शोहरत कमा सकती हूं, पर मुझे अपनी बहन से बहुत प्यार है और मेरी बहन ज्यादा प्रतिभाशाली नहीं, न ही सामान्य अर्थ में ज्यादा शिक्षित है, मैं सोचती हूं कि मैं सफल हो जाऊं तो उसे बहुत दुःख होगा!

ऐसी उदात्त भावना सबमें होगी यह अपेक्षा करना अवास्तविक होगा पर यह तो सच है कि जब हम सफलता के पीछे भागते हैं तो उन लोगों का ख्याल नहीं करते जो अक्सर इस व्यवस्था के कारण ही असफल रह जाते हैं। वे बेहतर इंसान हैं, पर उनमें प्रतिभा नहीं है, या जो प्रतिभा है, वह समाज के मूल्यों के हिसाब से ज्यादा महत्व नहीं रखती। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या शिक्षा का उद्देश्य समाज के मूल्यों के हिसाब से सिर्फ सफल होना है ? क्या हम समझ और शालीनता, स्नेह और करुणा की तुलना में सफलता को ज्यादा महत्व देते हैं?

जाने-अनजाने में हमारी शिक्षा व्यवस्था सफलता की उपासना पर जोर दे रही है। कोई सफल होने के साथ धनी हो तो उसे बहुत ऊंचा दर्जा दिया जाता है। स्कूलों के समारोहों में कलेक्टर या आयुक्त को बुलाया जाता है। कोई स्टार क्रिकेटर मिल सके, फिर तो क्या बात है। इससे बच्चों को यह साफ संदेश मिलता है कि उन्हें बड़े होकर वैसा ही बनना है। ऐसे समारोहों में किसी स्कूल के बहुत ही ईमानदार या समर्पित शिक्षक को क्यों नहीं बुलाया जा सकता? या किसी बच्चे से ही इन कार्यक्रमों का उद्घाटन वगैरह क्यों नहीं करवाया जा सकता?

एक भूखे-प्यासे, वंचित समाज में सफलता की पूजा आपत्तिजनक इसलिए भी है क्योंकि इसे हासिल करने के अवसर सबके पास नहीं हैं। जिन परिवारों में पहले से ही लोग उच्च पदों पर हैं, उनके बच्चों के लिए बेहतर अवसर होते हैं और वे दूसरे बच्चों की तुलना में ज्यादा आगे निकलने की सुभावना रखते हैं, भले ही दूसरे बच्चे ज्यादा मेहनती और प्रतिभावान हों। उनके आर्थिक और सामाजिक दबाव उन्हें उन्हीं कामों तक सीमित रखते हैं जिनसे उनका जीवन चल भर सके। बहुत ऊंचे सपने देखना उनके लिए वर्जित है। वंचित तबकों तक पहुंचते-पहुंचते पानी सूख जाता है, समृद्धि और सफलता की नदियां कहीं ऊंचाई पर ही रुक जाया करती हैं।

गांधीजी हृदय के संवर्द्धन या 'कल्चर ऑफ द हार्ट' की बात करते थे। इमोशनल कोशेंट को महत्व देते थे। यह बात उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में टॉलस्टॉय फार्म में शिक्षा संबंधी प्रयोगों के दौरान ही अप्रत्यक्ष रूप से कह दी थी। बौद्धिक ताकत, सफलता, प्रतिष्ठा और आर्थिक समृद्धि प्राप्त करना जीवन का एकमात्र उद्देश्य नहीं हो सकता और शिक्षक को प्राथमिक स्तर से ही यह बात समझनी और समझानी होगी। इससे उसमें अपना आत्म-सम्मान भी बढ़ेगा, क्योंकि अभी भी हमारे समाज में शिक्षक को एक निरीह प्राणी के



हवा में रहेगी मेरे ख्याल की बिजली

धार्मिक अंधविश्वास और कट्टरपन हमारी प्रगति में बहुत बड़े बाधक हैं। वे हमारे रास्ते के रोड़े साबित हुए हैं और उनसे हमें हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहिए। जो चीज आजाद विचारों को बर्दाश्त नहीं कर सकती, उसे समाप्त हो जाना चाहिए।

–शहीद-ए-आजम भगत सिंह

रूप में देखा जाता है। अक्सर लोग समझते हैं कि जब कोई, किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो पाता तो वह शिक्षक बन जाता है। शिक्षक को समाज की समूची तस्वीर बच्चों के सामने रखनी चाहिए। यह सिखाना चाहिए कि सफलता और धन ही जीवन का अकेला मकसद नहीं हो सकता। खासकर ऐसे समाज में जहां ये सबके लिए उपलब्ध न हो।

यह भी जरूरी है कि इन मूल्यों को परंपरागत अर्थ में व्याख्यायित न किया जाए, बल्कि उन्हें आज के संदर्भ में आधुनिक परिस्थितियों में स्पष्ट किया जाए। बच्चों को संसार के उन अरबपतियों के भी उदाहरण दिए जाने चाहिए जिन्होंने जीवन के आखिर में खुदकुशी कर ली। धन और प्रसिद्धि के गहरे निहितार्थ उनकी समग्रता में समझाने चाहिए। जार्ज बनार्ड शॉ ने इस संबंध में बहुत अच्छी बात कही थी कि **'एक धनी व्यक्ति और कोई नहीं, बस एक पैसे वाला गरीब इंसान होता है।'** सही शिक्षा में धन और सफलता के बखान के अलावा आंतरिक समृद्धि, सृजनशीलता, समझ, तार्किक सोच और स्नेह से भरे एक हृदय की आवश्यकता बच्चों को किसी भी तरह समझाई जानी चाहिए। इसमें शिक्षक की स्वयं की शिक्षा भी शामिल है क्योंकि यह सब वह ईमानदारी के साथ तभी बता सकता-सकती है जब वह खुद भी उन मूल्यों को थोड़ा बहुत जीता हो।

इसमें माता-पिता की भी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। घर पर ऐसी बातें ही नहीं की जानी चाहिए जिनसे बच्चों के मन पर इस तरह के झूठे मूल्य अंकित हो जाएं कि उन्हें बस धन और शोहरत के लिए अपने जीवन को न्यौछावर कर देना है। समेकित विकास का सौन्दर्य ही इस बात में है कि उसमें देह, बुद्धि, धन और प्रेम के साथ-साथ जीवन के गहरे प्रश्न पूछने की क्षमता विकसित हो। अंधाधुंध धन कमाने के अलावा सुरुचिपूर्ण साहित्य, कला, संगीत वगैरह के प्रति भी बच्चे का ध्यान आकर्षित किया जाए। अपने दैहिक स्वास्थ्य के बारे में भी वह उतना ही सजग हो सके। समूची धरती और छोटे-से-छोटे जीव-जंतुओं की फिक्र करने की सीख देना शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य में शामिल होना चाहिए। सर्वांगीण विकास इसी में निहित है। (सप्रेस से साभार)❑

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार। चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार।।
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार। सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।
किव चिआरा होईऐ कि कूड़ै तुटै पालि। हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि।।



गउड़ी महिला १

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं।।
रोगु न बिआपै ना जम दोखं।।
मुकत भए प्रभ रूप न रेखं।।१।।

जोगी कउ कैसा डरु होई।।
रूखि बिरखि ग्रिहि बाहरि सोइ।।रहाउ।।
निरभउ जोगी निरंजनु धिआवै।।
अनदिनु जागै सचि लिव लावै।।
सो जोगी मैरै मनि भावै।।२।।

कालु जालु ब्रहम अगनी जारे।।
जरा मरण गतु गरबु निवारे।।
आपि तरै पितरी निसतारे।।३।।

सतिगुरु सेवे जो जोगी होइ।।
भै रचि रहै सु निरभउ होइ।।
जैसा सेवै तैसो होइ।।४।।

नर निहकेवल निरभउ नाउ।।
अनाथह नाथ करे बलि जाउ।।
पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ।।५।।

अंतरि बाहरि एको जाणै।।
गुर कै सबदे आपु पछाणै।।
साचै सबदि दरि नीसाणै।।६।।

सबदि मरै तिसु निज घरि वासा।।
आवै न जावै चूकै आसा।।
गुर कै सबदि कमलु परगासा।।७।।

जो दीसै जो आस निरासा।।
काम क्रोध बिखु भूख पिआसा।।
नानक बिरले मिलहि उदासा।।८।।

-आदि ग्रन्थ, पृ. २२३-२४









मगर हम ठगे भी गए हैं ...

आज हमारे घर- परिवार में अंधेरा छा गया है ।
सावित्री के साम्राज्य में उगने वाले हजारों सूर्यों में से
एक आज अस्त हो गया है।।
अरविंद ओझा चले गए हैं।।
हमें रोते बिलखते छोड़ कर।।
एक तपस्वी मनस्वी छोटे भाई के इस असामयिक महाप्रयाण को
हम श्रद्धा से नमन करते हैं मगर हम ठगे भी गए हैं।
शब्द नहीं हैं।।
विनम्र और आत्मीय साथ के तमाम अवसरों पर तुमसे मिले
आदर और प्यार के लिए केवल सलाम शेष रह गया है
भीगी आंखों में।।
तुम जीत गए हो अरविंद!!!
हम हार गए हैं।।
हार हमारी हुई है।
आधुनिक विज्ञान और चिकित्सा का परचम लहराने वाले पूंजीवादी
समाज की हार हुई है।
हम ठगे से देख रहे हैं कि हमारी इंसानियत भी
हम से छीन ली गई है।।
कैसी विडंबना है कि जब तुम अस्पताल में थे
तब हम देखने तक नहीं आ सके।
दुनिया रोकती रही हमको और आज जब तुम चले जा रहे हो तब
भी हमें तुम्हारा मुखड़ा देखने को आने और
अलविदा कहने से भी रोका जा रहा है।
हमारे मनुष्य होने तक को शर्मसार किया जा रहा है।।
अंत समय में भी जो नहीं पहुंच सके वह भाई क्या कहलायेगा।।
माफी के साथ तुम्हें अलविदा कहने को मजबूर हो गए हैं।।
मगर जीत तुम्हारी ही हुई है।।
और हम तुम्हारी चिर शांति के लिए नत विनत हैं।। ❑

–रमेश थानवी

श्रद्धांजलि

साथियों, अभी-अभी समाचार जानकर मन अत्यंत कष्टप्रद हो गया। सरल सौम्य सादगी वाले हमारे भाई का इस तरह विहार करना कि वे अब मिलेंगे ही नहीं। हम सभी एक परिवार के साथी हैं कैसे रिक्त हो गए। सुशीला जी बच्चों को भी संभालना है। श्रद्धेय अरविंद भाई की कमी पूरी हो नहीं सकती। वे सदैव हमारे ह्रदय में रहेंगे। प्रभु से प्रार्थना है कि आध्यात्मिक संसार में भी शांति पुरुष को शांति मिले। कैसे विश्वास करें कि अरविंद भाई हम सभी को छोड़ कर चले गए। शत शत उन्हें नमन

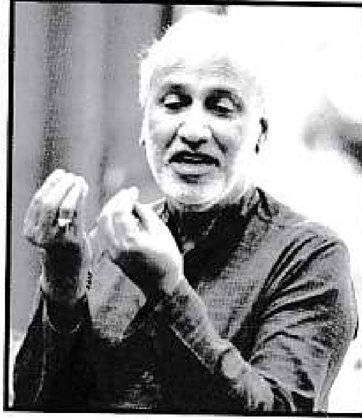
–आशा बोथरा

नमन उन्हें।ऊं शांति ऊं शांति।। अखंड-जोत सदा प्रज्वलित रहे ,ईश्वर से प्रार्थना है, उनकी स्मृति में हम सदैव उत्तम किरदार निभाने हेतु प्रयासरत रहें।

–प्रिंस सलीम

Arvindji's sudden demise is most shocking. Such a wonderful affectionate dynamic wise person he was. So difficult to use past tense. I pray for his peaceful onward journey.

-Smt. Varsha Das



अरविंद जी का देहावसान बेहद दुखद है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। परिवार को भगवान इस दुख की घड़ी में धैर्य एवं शांति प्रदान करें।

–ध्रुव यादव

I am really shocked & saddened to hear about Arvind's sudden demise. I knew him from our days on the Shiksha Karmi Board. He was a model of sincerity, humility and dedication to the cause of the poor. He had an in depth knowledge of ground realities and never flinched in bringing these up in high level meetings. He never took or gave offence. He will be missed dearly for his selfless services in the hard to reach areas of Rajasthan.
His endearing smile will be etched in my memory.
My deepest condolences to the bereaved family.

-Abhimanyu Singh

श्री ओझा साहब के आकस्मिक देहावसान का समाचार बहुत ही दुखद है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे एवं परिवार जन को इस असहनीय एवं अपूर्णनीय क्षति को सहन करने की शक्ति दे। ओम शांति।

–उषा बापना

श्री अरविंद जी के आकस्मिक निधन का समाचार अत्यंत दुखदायी है। इनके इस प्रकार चले जाने से न केवल उन सभी संस्थाओं की अपूरणीय क्षति हुई है जो शिक्षा, विकास और नारी सशक्तिकरण के काम में लगी हुई हैं, अपितु मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति भी है।

वे संधान की कार्यकारिणी के सम्मानित सदस्य थे.
दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि।

–राजेन्द्र भाणावत

Sudden demise of Arvind Ji is a shocking news for we all. My deep condolences to all including family and organisation to which he was closely associate. God bless his departed soul to rest in eternal peace. Om Shanti Shanti Shanti

-Raghavendra



ऑव न्यूज पेपर, नई दिल्ली के द्वारा पंजीकृत मासिक पत्रिका RNI 43602/77 ISSN No. 2581-981X

श्रद्धांजलि



जन्म : १२-४-१९४१ निवार्ण : २१-११-२०२०

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के पूर्व सचिव तथा समिति के संस्थापक सदस्य श्री सदाशिवराम शर्मा के असामयिक देहावसान का समाचार सुनकर हम सब को गहरा आघात लगा है। समिति ने एक समर्पित, कर्मठ और सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले साथी को खो दिया है। एक ऐसे सखा को जो सबके प्रिय थे और स्वैच्छिक सेवाभाव की अनूठी मिसाल थे। इस दु:ख की घड़ी में हम सभी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और घर-परिवार के सभी परिजनों एवं बंधु-बांधवों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

हम श्रद्धावनत हैं।

ॐ शांति, ॐ शांति, ॐ शांति

-समिति परिवार